हिन्दू महासभा को समर्पित पत्र

सर्वोपर देश हित

मासिक संरक्षक ॐ परमपिता परमात्मा, सहयोगी आपका स्नेह

सावरकर टाइम्स

संपादक : जंगबहादुर क्षत्रिय 9599552030 * मूल्य दो रुपए
पंजाब -07837460375 savarkartimes7@gmail.com

क्रांतिकारियों के गुरु वीर सावरकर जी

वर्ष-12 (मासिक) डाक तिथि : 11-12 फरवरी -2018 DELHIN/13377/2004 DL (E)-21/5052- नव संवत् का ग्यारहवां महीना, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २०७४

देश का विभाजन दो विचार धाराओं पर हुआ हिन्दू एवं मुस्लिम। पापिस्तान और हिन्दुस्थान। बंटवारे के कारण 35 लाख निर्दोष हिन्दुओं का भयंकर कत्लेआम, लाखों बलात्कार और सब कुछ लुट गया। कांग्रेसियों ने हिन्दू राज के स्थान पर भारत में धर्मनिरपेक्ष (धर्मविरूद्ध या धर्म विहीन या मानवता हीन) राज्य बनाकर हिन्दुओं के साथ विश्वासघात किया और इन्हीं इस्लाम व ईसाई आतंकवाद समर्थक धर्मनिरपेक्ष नेताओं ने भारत को पुनः पतन की ओर धकेल दिया। इस्लाम व ईसाईयत विदेशी हमलावर सभ्यताएं है, भारत की नहीं। 542 वर्ष पूर्व भारत में कोई भी मस्जिद नहीं थी, 250 वर्ष पूर्व भारत में कोई चर्च नहीं था। देश के धर्मनिरपेक्ष नेता राष्ट्रभक्त नहीं स्वार्थी सत्तालोलुप और देशद्रोही हैं। मूल निवासी हिन्दुओं का अस्तित्व एवं सम्मान सत्ता में हिन्दू महासभा को लाए बिना संभव नहीं। यदि अंग्रेज विदेशी हैं तो मुसलमान स्वदेशी कैसे- स्व. चमन लाल क्षत्रिय

राम मंदिर विवाद जमीन का विवाद है ना कि आस्था का सुप्रीम कोर्ट

सरदार महेंद्र सिंह

भारत के सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायधीश राम मंदिर विवाद पर कहां कि वह जमीन का विवाद है। ना कि आस्था का मंदिर को बाबर ने 1526ई. को भारत पर हमला कर राम मंदिर से राम की मूर्ति हटाकर उस मंदिर पर कब्जा किया और तीन वर्षों तक देश के सभी मंदिरों से भगवानों की मूर्तियां हटाकर वहां पर नमाज पढ़ी गई।

बाबर ने 1526ई. को भारत पर हमला कर राम मंदिर पर कब्जा किया

बाबर का घोर विरोध होने के कारण बाबार को विवश होकर भारत से भागना पड़ा और 1529 से 1530 के बीच बाबार की लाश अफगानिस्तान में मिली और वहां के मुसलमानों ने बाबर को वहीं दफन कर दिया।

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री जंगबहादुर क्षत्रिय ने एक्प्रेस नोट में कहा कि विश्व हिन्दू परिषद ने राम मंदिर का जो नया नक्शा प्रस्तुत किया है वो हिन्दू समाज का अपमान है। क्योंकि तीन गुम्मद वाला भगवानराम का मंदिर विश्व में श्रद्धा का केंद्र रहा है। जबकि विश्व हिन्दू परिषद का राम मंदिर से कोई लेन-देन नहीं है।

वह हिन्दू महासभा एवं निरमाई अखाड़े का केस सुप्रीम कोर्ट में चला रहा है और विश्व हिन्दू परिषद इस केस में हस्तक्षेप एवं प्रवेश नहीं कर सकती। श्री क्षत्रिय जी ने आगे बताया कि श्री रवि शंकर जी हमलावर सभ्यता को मानने वाले लोगों से बातचीत कर राम मंदिर विवाद को तूल देकर अयोध्या में ही बाबरी मस्जिद का निर्माण कराने का शंणयता कर रहा है। जिसकी हिन्दू महासभा कड़ी आलोचना कर रही है। जबकी श्री रविशंकर जी का राम मंदिर से कोई भी लेना-देना नहीं है।

पुलिस और सेना पर पत्थर-गोलियां चलाकर भारत का अपमान कर रहे हैं

आतंकियों का सफाये के लिए सेना को पुरा अधिकार दिया जाये-विसेन

अखिल भारत हिन्दू महासभा के अध्यक्ष जितेंद्र सिंह विसेन ने भारत सरकार से मांग की है कि देश के किसी क्षेत्र से पुलिस और सेना पर पत्थर व गोलियां मारी जाती हैं उस क्षेत्र के सफाया करने के लिए सेना को पूर्ण अधिकार दिया जाए श्री जितेंद्र सिंह ने चुनाव आयोग से मांग की है कि वहां के निगम पार्षद और विधायक व लोकसभा के सदस्य को अयोग्य घोषित कर सदस्यता रद्द कर देनी चाहिए। श्री विशेन ने कहा कि निगम पार्षद और विधायक व लोकसभा के सदस्य व देश के सभी राजनीतिक दल लोकतंत्र की आड़ में वोट बैंक के लिए हिंसा पर मोन धारन कर लेते हैं यहा राष्ट्र के साथ धोखा है।

छोटे राजन के साथ तिहाड़ जेल में होली मनाएंगे हिन्दू महासभा के कार्यकर्ता : जितेंद्र सिंह

नई दिल्ली, आज दिनांक 3 फरवरी 2018 दिन शनिवार को अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जितेंद्र सिंह विसेन जी के पहाड़गंज स्थित कैंप कार्यालयमें हुई प्रेसवार्ता में श्री जितेंद्र सिंह विसेन नेयह घोषणा की, इस वर्ष होली मंगल मिलन कार्यक्रम अखिल भारत हिन्दू महासभा तिहाड़ जेल में बंद राष्ट्र के गौरव हिन्दू डॉन देश से दाऊद इब्राहिम के जिहादी गुर्गों का सफाया करने वाले देश की जनता को भयमुक्त करके सरकार का धन व समय बचाने वाले छोटा राजन के साथ मनाएगी होली मंगल मिलन समारोह। इस कार्यक्रम के लिए श्री जितेंद्र सिंह विसेन ने बाकायदा तिहाड़ जेल के डायरेक्टर जनरल को पत्र लिख कर इसकी स्वीकृति मांगी है ताकि उपरोक्त कार्यक्रम तिहाड़ जेल में बंद छोटा राजन के साथ मनाया जा सके। श्री विसेन ने अपने संबोधन मेंयह भी कहा कि यदि प्रशासन इसकी अनुमति नहीं देता तो वह इसके खिलाफ न्याय जायेंगे और फिर तिहाड़ जेल में होने वाले इफ्तारीव क्रिसमस पर्व पर भी पाबंदी लगवाएंगे व जेल प्रशासन के खिलाफ आंदोलन भी छेड़ेंगे इसके अतिरिक्त श्री विसेन नेयह भी कहा कि अखिल भारत हिन्दू महासभा हिन्दू डॉ. छोटा राजन के द्वारा राष्ट्र के प्रति किये गये कार्य (जिहादी गुर्गों का सफाया) करने के लिए छोटा राजन को राष्ट्र रत्न से सम्मानित करेगी व भारत एवं महाराष्ट्र सरकार से छोटा राजन के ऊपर चल रहे सभी मुकदमों को वापिस लेने की मांग करेगी।

माननीय श्री रामनाथ कोविंद जी राष्ट्रपति भारत
मुख्य न्यायधीश सुप्रीम कोर्ट

सादर नमस्कार

विषय,

देश में नई पीढी के चरित्र एवं रेप की घटनाओं पर विचार।

माननीय महोदय दिल्ली के राज्यपाल श्री अनील बैजल जी दिल्ली के मुख्य मंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी। दिल्ली हाई कोर्ट के न्यायधीश को पत्र लिखे गये जिसमें कहा गया कि नई पीढ़ी के युवा छात्रों के चरित्र औररेप की घटना रोकने के विषय पर लिखे पत्र में बताया कि 12 वर्ष से लेकर 22 वर्ष तक के लड़के-लड़की खुले आकाश के नीचे खुल्लम-खुल्ला रंगरलीयां मनाते देखे जा रहे हैं। इसी विषय पर दिल्ली हाई कोर्ट के मुख्य न्यायधीश ने एक पत्र दिल्ली के पुलिस आयुक्त को लिखा की आप रेप की घटना रोकने पर विशेष ध्यान दें। यह पत्र सभी आपको भेज रहे हैं ।

दीपक चौपड़ा स. संपादक सावरकर टाइम्स

इस्लामी विद्वान तारिक रमजान पर दुष्कर्म का मामला दर्ज

पेरिस। इस्लामी विद्वान तारिक रमजान के खिलाफ आज दुष्कर्म का मामला दर्ज किया गया। 2 महिलाओं ने आरोप लगाए थे कि उसनेएक होटल में 2009 और 2012 में उनके साथ दुष्कर्म कियाथा।

न्यायिक सूत्रों ने बताया कि बुधवार को रमजान को गिरफ्तार कर लिया गया था। उस पर अब दुष्कर्म और इससे संबंधित आरोप में मामले दर्ज किए गए हैं। आरोपी स्विट्जरलैंड का नागरिक है जिसके दादा ने मिस्र में मुस्लिम ब्रदरहुडकी स्थापना की थी। रमजान ने इन आरोपों को खारिज किया है।

सावरकर टाइम्स हिन्दू राज्य की लोकतंत्र प्रणाली की नई पीढ़ी को सही जानकारी प्राप्त करने के लिए आपके आर्थिक सहयोग की अति आवश्यकता है।

स्टेट बैंक हैदराबाद ब्रांच, ए-22 विवेक विहार दिल्ली-95
हमारा खाता नं. 62384620050 —संपादक

AMAR
BATTERIES & ELECTRICALS
Auth. Distributor : PRESTOLITE Batteries
ACTION BATTERIES Kaycee BATTERIES
Auth. Dealer:
EXIDE BATTERIES AMARON TATA
MICROTEK Su Kam
B-11, Super, Bazar, D.D.A.
Mkt. Vivek Vihar-Delhi-95
Ph. 22150396, 22159757

Mob. 9999994910
9899822518
SHRI RAMRAJ ASSOCIATES
SAIE. PURCHASE & COLLABORATION
7/388, Swami Amar Dev Marg.
Jwala Nagar, Shahdara, Delhi-32

GOBIND MEDICAL STORES
COUNTER DELIVERY
1715/2, MANGAL BUILDING, BHAGIRATH PALACE, DELHI-110006
Phones : 2386767, 9811457330, 9911022245,
Email : sgms_rakesh@yahoo.co.in
S.T. No. : LC/14/000409/05/71 D.L. No. 26(375)20B&21B TIN: 07820000409

कोई धोखा नहीं, कोई लूट नहीं
कोलोबोरेशन पर या ठेके पर मेटीरियल सहित मकान/कोठी बनवाने के लिए मिलें
1. पूरी ईमानदारी मिलेगी।
2. मनमर्जी का तय किया हुआ मेटीरियल मिलेगा।
3. मनमर्जी का पीओपी, वुडवर्क और बाथरूम मिलेगा।
4. लैंटर और पिलर, बीम भरपूर सरिये व सिमेंट के होंगे।
5. निर्माण का पीरियड, रेट एवं शर्तें भी अन्य ठेकेदारों के मुकाबले लाभदायी आपके लिए होंगी।
6. हमारी ईमानदारी की चेकिंग हेतु आप अपना सुपरवाइजर बिठा सकते हैं। उसकी तनख्वा हम देंगे।
आलोक जिंदल-9811112571

संसार के स्वामी ईश्वर का मुख्य नाम 'ओ३म' ही क्यों?

लेखक - डॉ. गंगा शरण आर्य

लोक व्यवहार की सिद्धि के लिए प्रत्येक पदार्थ का कुछ न कुछ नाम अवश्य रखा जाता है। यदि ऐसा न किया जाए तो समाज का परस्पर व्यवहार चल ही नहीं सकता। इसी सिद्धांत के अनुसार मानवमात्र के उपास्य देव परमात्मा को भी उसके गुण कर्म स्वभाव के अनुसार किसी नाम से पुकारा जाना आवश्यक है तभी नाम की सार्थकता सिद्ध होगी। प्रायः गुण कर्म स्वभाव के अनुसार हम सांसारिक पदार्थों एवं व्यक्तियों को किसी न किसी नाम से पुकारते हैं यह आवश्यक है। तभी नाम की सार्थकता सिद्ध होगी। प्रायः गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार हम सांसारिक पदार्थों एवं व्यक्तियों को किसी न किसी नाम से पुकारते हैं यह आवश्यक है। तभी नाम की सार्थकता सिद्ध होगी।

सांसारिक वस्तु एवं व्यक्तियों के नाम प्रायः गुण-कर्म-स्वभाव के विपरीत भी पाए जाते हैं लेकिन ईश्वर का कोई भी वेद प्रतिपादित नाम ऐसा नहीं है जो उसके गुण-कर्म-स्वभाव के अनुकूल व सार्थक न हो। यही ईश्वर के नामों की विशेषता है। ऋषिवर देव दयानंद के द्वारा परमेश्वर के अलग-अलग नामों की व्याख्या (गुण कर्म स्वभाव के अनुसार) की गई है। संसार में अधिकतर लोग उस परमात्मा को गौणिक नामों से स्मरण करते हैं जिस परमात्मा का मुख्य सर्वोत्तम एवं निज नाम 'ओ३म' है। संसार के सभी नाम दो प्रकार के होते हैं मुख्य और गौणिक। मुख्य नाम ही वास्तविक अपरिवर्तनशील होता है। गौणिक अर्थात् गुण, कर्म, स्वभाव अनुसार रखे गए नाम बदल भी सकते हैं जैसे बालक जन्म के पश्चात नामकरण संस्कार के द्वारा नाम प्राप्त करता है वह नाम मुख्य होता है जिसको जीवनभर बदला नहीं करते। किंतु जैसे-जैसे बालक बड़ा होता है तो शारीरिक परिवर्तन व गुण तथा कर्म के अनुसार अनेक नामों को प्राप्त करता है। मोटा होने पर मोटू, लम्बा होने पर लम्बू, काला होने पर कालू ये नाम बदले भी जा सकते हैं। मान लो कोई बालक किसी धनी परिवार में पैदा हुआ उसका नाम करोड़ीमल रखा गया किंतु दुर्भाग्यवश चार-पांच वर्ष पश्चात उसे निर्धनता का मुख देखनापड़ा। क्या अब उसके नाम को बदलकर गरीबूमल रखा जाएगा? कदापि नहीं। मुख्य नाम का परिवर्तन संभव नहीं है गौणिक अर्थात् गुणवाचक नाम परिवर्तित होते रहते हैं। सक्षेपतः ईश्वर के भी अनन्त नाम है किंतु मुख्य और निज नाम ओ३म है।

ओ३म शब्द वेद में प्रभु के मुख्य नाम के रूप में आया है। ओ३म किसी भौतिक वस्तु का नाम नहीं है लेकिन ओ३म शब्द की विशेषता यह है कि अन्य शब्दों की भांति ओ३म शब्द की विभक्तियां नहीं चलती, न यह शब्द एकवचन, द्विवचन, बहुवचन में प्रयुक्त होता है। उदाहरण के तौरपर जैसे हम 'शिवाय नमः, गुरवे नमः, रामाय नमः, ते नमः (नमस्ते) उच्चारण करते हैं जिसको नमन करते हैं उसमें चतुर्थी विभक्ति लगाते हैं। लेकिन ओमाय नमः ऐसा नहीं बोलते ओम् नमः ही बोलते हैं। क्योंकि यह ईश्वर का मुख्य निज नाम है जो ईश्वर एक ही है अविभक्त (जिसके टुकड़े नहीं किये जा सकते) हैं, अखण्ड है जिसके अंश नहीं किये जा सकते, सर्वत्र व्यापक होने से सर्वव्यापक कहलाता है। पूरी सृष्टि ईश्वर से व्याप्त है। जीवात्मा और ईश्वर में व्याप्य-व्यापक (अर्थात् जैसे अग्नि में लोहे का गोला तपाने पर अग्निस्वरूप हो जाता है लोहे का गोला व्याप्त और अग्नि व्यापक है। अर्थात जो अंदर बाहर रहती है वह व्यापक और जिसके अंदर रहे वह व्याप्य) संबंध है। अतः मुख्य नाम ओ३म वेदों में स्वीकार किया गया है। ओ३म को छोड़कर शेष सभी नामों में विभक्ति का प्रयोग होता है। ओ३म में विभक्ति लगाने का सर्वत्र निषेध है सर्वव्यापक और अखण्ड होने से।

वेद से पुरानी इस धरती पर कोई पुस्तक नहीं है। वेद की संसार के सर्वाधिक प्राचीन लिखित ग्रंथ है। इसमें जो भाषा है वह संस्कृत है इनमें जो धर्म है वह वैदिक धर्म कहलाता है। अतः वैदिक धर्म मनुष्यजाति की उन्नति का सनातन धर्म है। इसमें ईश्वर का सर्वोत्तम नाम ओ३म है जिसका प्रकार बीज मूल में विशाल वृक्ष छिपा होता है। उसी प्रकार ओ३म ही ईश्वर का सनातन एवं सर्वोत्तम नाम है। ओ३म शब्द में परमेश्वर के गुण बताने वाले सभी अर्थ आ जाते हैं ओ३म में ही परमेश्वर के अनेक नाम आ जाते हैं।

ओ३म के तीन भाग हैं - अकार + उकार + मकार (अ, उ, म्)

ईश्वर के तीन कार्य हैं- सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय। उत्पत्ति - सम्पूर्ण प्राणी जगत् एवं वनस्पति जगत तथा सूर्य चन्द्रमादि सृष्टि का बनाना। स्थिति - निश्चित आयुपर्यन्त इन सभी को बनाए रखना व सब जीवों को उनके कर्मानुसार पाप-पुण्य रूप कर्मों का बुरा और भला फल देना। प्रलय - जीर्ण होने पर नवसृष्टि हेतु परिवर्तन करना।

ईश्वर के तीन गुण - सत् + चित् + आनन्द (सच्चिदानन्द)

ओ३म (अ + उ + म्) का अर्थ

अ = विराट्, अग्नि, विश्वादि

इस सम्पूर्ण संसार में समाया हुआ होने के कारण विराट् है। वह अनेक प्रकार से संसार को प्रकाशित करता है। इससे वह अग्नि है। सम्पूर्ण विश्व उसी का प्रकाशित रूप है, इससे वह विश्व है।

उ = हिरण्यगर्भ, वायु तैजस् आदि

हिरण्यगर्भ का अर्थ है प्रकाशस्वरूप या प्रकाशित करने वाला। सूर्य चन्द्र आदि को प्रकाशित करने वाला होने के कारण हिरण्यगर्भ हैं। सम्पूर्ण संसार को धारण करने वाला तथा अनन्त शक्तिशाली होने के कारण वह वायु है। सूर्य चन्द्र आदि में उसी का रूप प्रकाशित है, इससे वह तैजस् है।

म् = ईश्वर, आदित्य प्राज्ञादि

जिसका सत्य विचार शील ज्ञान एवं ऐश्वर्य है, वह ईश्वर है। जिसका विनाश कभी न हो वह आदित्य है। जो निर्भ्रान्त चराचर जगत के व्यावहार को यथावत् जानता है, वह प्राज्ञ है।

देश में हिन्दू के रूप में जीना है तो राजनीति में हिन्दू के रूप में खड़े हों। हिन्दू महासभा के सदस्य बने और बनाएं।

संपादक

Aggarwal Sports
Dealers & Suppliars of sports Goods, Indoor Games, Musical Instruments, Sports Wears & Sports Shoes Specialist in: All kind of Sports Goods
Ph: 22307151, 9811667151

Vinay K. Chadha Ph: 2213534 2283534
New Calcutta Jewellers (Regd.)

Double Storey Showroom
Gold Diamond & Silver Showroom
Shop: Chowk Phullan Wala, Bazar Kalan, Jalandhar

Authorised Sale & Service Dealers: Gourav Singhal 22154516 22157597 9810420396
GENERAL, LG, ONIDA, HITACHI, Panasonic, BLUE STAR, DAIKIN, LUMINOUS, EXIDE
Santosh Enterprises
25/1 SHIVA KHAND OPP. VIVEK VIHAR, PHASE-II DESU OFFICE, DELHI-95
E-mail santosh1_enterprises@rediffmail.com

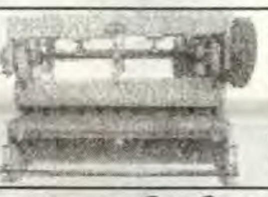
Vishal Goyal 9999359623
Ayush Jain 8800716797
Goyal Sheet Cutter
MS SHEET AVAILABLE
SS Cutting upto 6mm & Lenght 8 ft.
10335, Sadar Thana Road, Motia Khan, New Delhi-110055

KE Ph.: 23412488 23414696
Kurta Emproium
INDIA'S LEADING STORE FOR LUCKNAWI CHICKEN WORK & FANCY KURTA PYJAMA
E-mail: Lucknowsewa@rediffmail.com
12, Shanker Market, Connought Plaee, New Delhi-01

नेत्रदान महादान महाकल्याण
दृष्टि जीवन है
AGIFT ONLYYOUCANGIUE- वह अमूल्य उपहार जो आप ही दे सकते हैं मृत्योपरांत राष्ट्र को नेत्रदान करने का आज ही संकल्प करें। आपका नेदान दो व्यक्तियों को जीवन ज्योति देगा। नेत्रदान संबंधी जानकारी हेतू संपर्क करें:-
रमेश चंद लूथरा-85, जागृति एन्कलेव फेस-III दिल्ली-92
(M) 9873241771 (R) 01122145303
(DIRECTOR/COORDINATOR-EYEDONATION PROJECT)
महावीर इंटरनेशनल (रजि. स्वयं सेवी संस्था), 6550 मेन कुतुब रोड नवी करीम, नई दिल्ली-55, फोन-01123526502, 01123510770

P.K. PAINT & HARDWARE STORE
SHUNTY AHUJA, LOKESH AHUJA
DEAKSIN:PAINT, PRIMER OBD & HARDWAREMATERIAL ETC
27/38, JWALA NAGAR, SHAGDARA, DELHI-110032
Ph. 9811470111, 9213731331, 22301603

Raman Kumar Lead Advisor Email:rkon62@gmai.com
RKON
m 09815893411
ISI Marka EXPORT & CONSULTANT
• ISO 9001,ISO 140001, OHSAS, 18001, ISO 22000, HACCP, ISO/TS 16949
• ISO 20000, ISO 27001, ISO 13485, ISO 10002, SA 8000, SRM Certification
• CGMP, HALAL, BRC, Certificate, GAIN Certificate, CE Mark Certificate, NABH, NABL ApprovedTest Report
• Liasoning for ISI Mark Certificate , CPWD, DGS&D ,NSIC, BEE, Star Rating, FPO , MFPO Registration
• IE Code ISBN NO. , trademark , Logo, Copy right ,& other Registration
Regd. Off.: B-III/772, New grain Market Road, Jalandhar City. 144008 (India)

सोना चांदी धाम
Aggarwal
Silver Palace
528, Maharaja Agrasen Marg, Bara Bazar Opp. Aggarwal; Sports, Shahdra, Delhi-32
9911167151, 22307152

हमारा खाता नं. 62384620050 जंगबहादुर क्षत्रिय, मो. 9599552030 स्टेट बैंक हैदराबाद ब्रांच, ए-22 विवेक विहार दिल्ली-95 पर आर्थिक सहयोग देकर कृतार्थ करें।

संपादक, मुद्रक, प्रकाशकः जंगबहादुर क्षत्रिय, 9599552030, डॉ. संतोष राय प्रबंध संपादक-9999188800, मुरारी लाल लोहरा 9350895166, लखी चंद बंसल, नारायणा, दिल्ली 09810085046, अजय दत्त गौड़, 9911926255, कृष्णा नगर, दिल्ली-9871315350, आलोक जिंदल दिल्ली-9811112571, महेंद्र सिंह- 9312295299, दीपक चोपड़ा कार्यध्यक्ष-08459515751, **कार्यालय- 7/377, ज्वाला नगर, शाहदरा, दिल्ली-32**, कानूनी सलाहकारः डॉ. वी.पी. शर्मा, अधिवक्ता रामजन्म भूमि। किसी भी लेख से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी वाद-विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली कोर्ट ही होगा। कोर्ट से पहले मुकदमा प्रेस काउंसिल से जीतना होगा। हमारा उद्देश्य धन कमाना बिल्कुल भी नहीं है। केवल और केवल राष्ट्र रक्षा एवं धर्म रक्षा है। प्रकाशित बालाजी आफसेट नवीन शाहदरा, दिल्ली-32।

कुरान व बाइबिल कहते हैं जो मुझे नहीं मानते वे काफिर हैं धर्म तो केवल हिन्दू है मिलाकर देखें

संग्रहकर्ता - सेठ रोशन लाल अग्रवाल

संख्याबल भी एक शक्ति ही है।

(आगे से)

घास का तिनका रहता तो तिनका ही है पर उसके जैसे अनेक तिनके, नारियल के अनेक रेशे और रस्सियों के अनेक गुच्छे इकट्ठे करके अर्थात उनका संख्याबल बढ़ाकर ही उनको बल देकर ही उससे एक संघटित नाड़ा या रस्सी बनाया जा सकता है जो हाथी को बांध सकता है। धान का एक ही पौधा लगाकर उसका गुणवर्धन करने के लिये चाहे जितने प्रयास किये जायें तो भी उससे एक परिवार का तो छोड़ों पर एक व्यक्ति का पेट भर सके इतने दाने भी उत्पन्न होना कठिन है। पर वैसे अनेक पौधे लगाकर यदि कृषि की जाये तो तत्काल मानीयों से धान उत्पन्न किया जा सकता है और इस प्रकार उनके संख्याबल के वर्धन से ही पेट भरने का कार्य उनसे करवाया जा सकता है। यदि कोई सज्जन यह कहें कि अजी बोरे भर-भरके चावल इकट्ठा करने की झंझट में क्यों पड़ते हो, पागल कहीं के... संख्याबल तो तुच्छ है, यह देखो, मैं चावल का एक दाना लेता हूं, उसके गुणवर्धन की और विशेष ध्यान देता हूं और उसका एक डेकची भर के चावल पकाकर आपको देता हूं, ले जाने दो उन चोट्टों को वे बाकी के चावल से भरे बोरे? नहीं तो वे रुष्ट हो जाएंगे? तो उनके गुणवर्धन के प्रयोग सफल होकर चावल के एक दाने का एक डेकची चावल पकना जितना दुर्घट है उतना ही दुर्बल एवं मूर्खतापूर्ण है उनका यह तत्वज्ञान कि जितने वे भ्रष्ट कर सकते हैं उतने को उन्हें भ्रष्ट करने दो, फिर जो बचे रहेंगे, उनके गुणवर्धन की ओर हम विशेष ध्यान देंगे।

इसीलिए तो दस शस्त्रधारी महान अवतार भी संख्याबल की सहायता के बिना अपने विपक्षी समाज से टकरा नहीं सके। भगवान राम तो एकवचनी, अवतारी पुरुष थे, तथापि *लंका पर वे तब ही आक्रमण कर सके जब वानरों का* संख्याबल उन्होंने प्राप्त किया। वे स्वयं अवतारी पुरुष होने पर भी वानरों के समान असंस्कृत योनि के प्राणियों की सहायता उन्हें लेनी पड़ी? संख्याबल के बिना केवल गुणबल इतना पंगु है। रावण तो शरीर गुणवर्धन कीमानो पराकाष्ठा ही था, उसे बीस भुजाएं थीं और दस सिर? पर हजारों राक्षसों के संख्याबल के बिना उतने दिन भी वह लंका को लड़ा नहीं सकता था जितने दिनउसने लंका को लड़ाया। भगवान कृष्ण, सुदर्शनधारी! पर अकेले महाभारत नहीं लड़ सके, सव्यसाची अर्जुन से लेकर घटोत्कच राक्षस तक के सैकड़ों वीरों का एवं लाखों सैनिकों का संख्याबल उन्हें एकत्रित करना पड़ा। गणेत्कर्ष प्राप्त भगवान श्रीकृष्ण जैसी विभूतियां भी संख्याबल की पूर्ण उपेक्षा न कर सकीं। वह मुहम्मद पैगम्बर देखो, मक्का में अकेला था, फिर भी पैगम्बर तो था ही, पर संख्याबल के सम्मुख इतना दीन था कि चोरी-छुपे नमाज पढ़ता था। और दास, दरिद्री, गुणी, अवगुणी जो भी मिल जाये, ऐसे अनुयायी संग्रहीत कर जब वह मदीने का संख्या बल अपने साथ बनाने लगा तब कहीं प्रकट रूप सेवह मक्का में नमाज पढ़ सका। उसे भी संख्याबल का उचित ज्ञान था इसीलिए कोई भी संभव प्रलोभन देकर मुसलमानों का संख्याबल बढ़ाने हेतु उसने उतने कठिन परिश्रम किये जितने गुणबल बढ़ाने हेतु किये थे। मुसलमानी इतिहास तो संख्याबल की लालसा के लाल स्याही में ही लिखा गया है। अफ्रीका में जब कोई प्रदेश जीता जाता, तो संबंधित मुसलमान विजेता जो कर उगाता था उसमें से आधा द्रव्य के रूप में होता था और शेष हिस्सा जीती हुई जाति की स्त्रियों के रूप में होता था, क्योंकि, स्त्रियों के रूप में प्राप्त वह कर मुसलमानी सेना के सिपाहियों में बांटने से उससे मुसलमानी संतति बढ़ती थी- संख्याबल बढ़ता था। चोर-बदमाशों को, बच्चों-कच्चों को भी जो बल पूर्वक या प्रलोभन देकर आज भी मुसलमान या ईसाई बनाया जाता है, वह कोई इसलिये नहीं होता कि उस व्यक्ति का तत्काल गुण वर्धन करना होता है, या उस प्रकार के नीच लोगों को जाति में लेने से जाति का गुणवर्धन होता है। तो उन्हें इसीलिए लिया जाता है कि उससे वंयावर्धन होता है और कल जहां उनका एक भी अनुयायी दिखाई नहीं देता था, वहां उनके आज करोड़ों अनुयायी दिखाई दे रहे हैं, इतना ही नहीं तो भारी हुए हैं, इस बात से कौन भला नकारा कर सकता है?

(शेष अगले अंक में)

संग्रहकर्ता - प्रो. ए.के. मल्होत्रा

अथ चतुर्दशसमुल्लासारम्भः

अथ यवनमतविषयं व्याख्यास्यामः

(समीक्षक) यह कौन सी फिलासफी है कि जिन जानवरों के शरीर में सब तत्व दीखते हैं और कहना कि केवल पानी से उत्पन्न किये। यह केवल अविद्या की बात है। जब अल्लाह के साथ पैगम्बर की आज्ञा पालन करना होता है तो खुदा का शरीक हो गया वा नहीं? यदि ऐसा है तो क्यों खुदा को लाशरीक कुरान में लिखा और कहते हो?।।117।।

118-और जिन दिन कि फट जावेगा आसमान साथ बदली के और उतारे जावेंगे फरिश्ते।। बस मत कहा मान काफिरों का और झगड़ा कर उनसे साथ झगड़ा बढ़ा।। और बदल डालता है अल्लाह बुराइयों उनकी को भलाइयों से।। और जो कोई तोबाः करे और कर्म करें अच्छे बस निश्चय आता है तरफ अल्लाह की।।

-मं.४। सि. १९। सू. २५। आ.२५।५२।७०।७१।।

(समीक्षक) यह बात कभी सच नहीं हो सकती है कि आकाश बादलों के साथ फट जावे। यदि आकाश कोई मूर्तिमान पदार्थ हो तो फट सकता है। यह मुसलमानों का कुरान शांति भङ्ग कर गदर झगड़ा मचाने वाला है। इसीलिये धार्मिक विद्वान लोग इसको नहीं मानते। यह भी अच्छा न्याय है कि जो पाप और पुण्य का अदला बदला हो जाये। क्या यह तिल और उड़द की सी बात है जो पलटा हो जावे? जो तोबा करने से पाप छूटे और ईश्वर मिले तो कोई भी पाप करने से न डरे। इसलिये ये सब बातें विद्या से विरुद्ध हैं।।११८।।

११९-वही की हमने तरफ मूसा की यह कि ले चल रात को बंदों मेरे को, निश्चय तुम पीछा किये जाओगे।। बस भेजे लोग फिरोन ने बीच नगरों के जमा करने वाले।। और वह पुरुष कि जिसने पैदा किया मुझ को है। बस वही मार्ग दिखलाता है। और वह जो खिलाता है मुझ को पिलाता है मुझ को। और उस पुरुष की आशा रखता हूं मैं यह कि क्षमा करे वास्ते मेरे अपराध मेरा दिन कयामत के।।

-मं.५। सि. १९। सू. २६। आ.५२।५३।७८।७९।८२।।

(समीक्षक) जब खुदा ने मूसा की ओर बही भेजीपुनः दाऊद, ईसा और मुहम्मद साहेब की ओर किताब क्यों भेजी? क्योंकि परमेश्वर की बात सदा एक सी और बेभूल होती है और उसके पीछे कुरान तक पुस्तकों का भेजना पहिली पुस्तक को अपूर्ण भूलयुक्त माना जायगा। यदि ये तीन पुस्तक सच्चे हैं तो यह कुरान झूठा होगा। चारो का जो कि परस्पर प्रायः विरोध रखते हैं उनका सर्वथा सत्य होना नहीं हो सकता। यदि खुदा ने रूह अर्थात जीव पैदा किये हैं तो वे मर भी जायेंगे अर्थात उनका कभी नाश कभी अभाव भी होगा? जो परमेश्वर ही मनुष्यादि प्राणियों को खिलाता पिलाता है तो किसी को रोग होना न चाहिये और सब को तुल्य भोजन देना चाहिये। पक्षपात से एक को उत्तम और दूसरे को निकृष्ट जैसा कि राजा और कंगले को श्रेष्ठ निकृष्ट भोजन मिलता है, न होना चाहिये। जब परमेश्वर ही खिलाने पिलाने और पथ्य कराने वाला है तो रोग ही न होने चाहिये परंतु मुसलमान आदि को भी रोग होते हैं। यदि खुदा ही रोग छुड़ाकर आराम करने वाला है तो मुसलमानों के शरीरों में रोग न रहना चाहिये। यदि रहता है तो खुदा पूरा वैद्य नहीं है यदि पूरा वैद्य है तो मुसलमानों के शरीरों में रोग क्यों रहते हैं? यदि वही मारता है और जिलाता है तो उसी खुदा का पाप पुण्य लगता होगा। यदि जन्मजन्मान्तर के कर्मानुसार व्यवस्थ्ज्ञा करता है तो उस को कुछ भी अपराध नहीं। यदि वह पाप क्षमा और न्याय कयामत की रात में करता है तो खुदा पाप बढ़ाने वाला होकर पापयुक्त होगा। यदि क्षमा नहीं करता तो यह कुरान की बात झूठी होने से बच नहीं सकती है।।११९।।

१२०-नहीं तू परंतु आदमी मानिंद हमारी बस ले आ कुछ निशानी जो है तू सच्चों से। कहा यह ऊंटनी है वास्ते उसके पानी पीना है एक बार।।

-मं.५। सि. १९। सू. २६। आ.१५४।१५५।।

(शेष अगले अंक में)

संग्रहकर्ता - टी.डी. चांदना आगरा

अथ त्रयोदशसमुल्लासारम्भः

अथ कृश्चीनमतविषयं व्याख्यास्यामः

(समीक्षक) जब वे एक स्थान पर जो गलगथा था अर्थात् खोपड़ा का स्थान कहाता है, पहुंचे।। तब उन्होंने सिरके में पित्त मिलाके उसे पीने को दिया परंतु उसने चीख के पीना न चाहा। तब उन्होंने उसको क्रूश परचढ़ाया। और उन्होंने उसका दोषपत्र उसके सिर के ऊपर लगाया। तब दो डाकू एक दाहिनी ओर और दूसरा बाई ओर उसके संग क्रूशों पर चढ़ाये गये। जो लोग उधर से आते जाते थे उन्होंने अपने सिर हिला के और यह कह के उसकी निंदा की। हे मंदिर के ढहाने वाले अपने को बचा, जो तू ईश्वर का पुत्र है तो क्रूश पर से उतर आ।। इसी रीति से प्रधान याजकों ने भी अध्यापकों और प्राचीनों के संगियों ने ठट्ठा कर कहा।। उसने औरों को बचाया अपने को बचा नहीं सकता है, जो वह इस्रायल का राजा है तो क्रूश पर से अब उतर आवे और हम उसका विश्वास करेंगे। वह ईश्वर पर भूरोसा रखता है, यदि ईश्वर उसें चाहता है तो उसको बचावे क्योंकि उसने कहा मैं ईश्वर का पुत्र हूं। जो डाकू उसके संग चढ़ाये गये उन्होंने भी इसी रीति से उसकी निंदा की। दो प्रहार से तीसरे प्रहार लो सारे देश में अंधकार हो गया। तीसरे प्रहार के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकार के कहा एली एली लामा अबक्तनी अर्थात् हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तूने क्यों मुझे त्यागा है।। जो लोग वहां खड़े थे उनमें से कितनों ने यह सुनके कहा, वह एलीयाह को बुलाता है। उनमें से एक ने तुरंत दौड़ के इस्पंज लेके सिरके में भगोया और नल पर रख के उसे पीने को दिया। तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से पुकार के प्राण त्यागा।।

-इ.म.प. २७। आ.११। १२। १३। १४। २२। २३। २४। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१। ३३। ३४। ३५। ३७। ३८। ३९। ४०। ४१। ४२। ४३। ४४। ४५। ४६। ४७। ४८। ५०।।

(समीक्षक) सर्वथा यीशु के साथ उन दुष्टों ने बुरा काम किया। परंतु यीशु का भी दोष है। क्योंकि ईश्वर का न कोई पुद्ध न वह किसी का बाप है। क्योंकि वह किसी का बाप होवे तो किसी का श्वसुर, श्याला संबंधी आदि भी होवे। और जब अध्यक्ष ने पूछा था तब जैसा सच था, उत्तरदेना था। और यह ठीक है कि जो-जो आश्चर्य-कर्म्म प्रथम किये हुए सच्चे होते तो अब भी क्रूश पर से उतर कर सब को अपने शिष्य बना लेता और जो वह ईश्वर का पुत्र होता तो ईश्वर भी उसको बचा लेता। जो वह त्रिकालदर्शी होता तो सिर्के में पित्त मिले हुए को चीख के क्यों छोड़ता। वह पहले ही से जानता होता। और जो वह करामाती होता तो पुकार-पुकार के प्राण क्यों त्यागता? इसे जानना चाहिए कि चाहे कोई कितनी भी चतुराई करे परंतु अंत में सच-सच और झूठ-झूठ हो जाता है। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि यीशु एक उस समय के जंगली मनुष्यों में से कुछ अच्छा था। न वह करामाती, न वह ईश्वर का पुत्र और न विद्वान था। क्योंकि जो ऐसा होता तो ऐसा वह दुख क्यों भोगता?।।९०।।

९१-और देखो, बड़ा भुईडोल हुआ कि परमेश्वर का एक दूत उतरा और आ के कबर के द्वार पर से पत्थर लुढ़का के उस पर बैठा।। वह यहां नहीं है, जैसे उसने कहा वैसे जी उठा है।। जब वे उसके शिष्यों को संदेश देने को जाती थी, देखो यीशु उनसे आ मिला, कहा कल्याण हो और उन्होंने निकट आ, उसके पांव पकड़ के उसको प्रणाम किया। तब यीशु ने कहा मत डरो, जाके मेरे भाइयों से कह दो वे गालील को जावें और वहां वे मुझे देखेंगे।। ग्यारह शिष्य गालील में उस पर्वत पर गये जो यीशु ने उन्हें बताया था और उन्होंने उसे देखके उसको प्रणाम किया पर कितनों का संदेह हुआ। यीशु ने उनके पास आ उनसे कहा स्वर्ग में और पृथ्वी पर समस्त अधिकार मुझको दिया गया है।। और देखो मैं जगत् के अंत लों सब दिन तुम्हारे संग हूं।।

-इ.म.प. २८। आ. २। ६। ९। १०। १६। १७। १८। २०।

(समीक्षक) यह बात भी मानने योग्य नहीं, क्योंकि सृष्टिक्रम और विद्याविरुद्ध है। प्रथम ईश्वर के पास दूतों का होना, उनको जहां-तहां भेजना, ऊपर से उतरना, क्या तहसीलदारी, कलेक्टरी के समान ईश्वर को बना दिया? क्या उसी शरीर से स्वर्ग को गया और जी उठा? क्योंकि उन स्त्रियों ने उसके पग पकड़ के प्रणाम किया तो क्या वही शरीर था? और वह तीन दिन लों सड़ क्यों न गया? और अपने मुख से सबका अधिकारी बनना केवल दम्भ की बात है। शिष्यों से मिलना और उनसे सब बातें करनी असंभव है। क्योंकि जो ये बातें सच हो तो आजकल भी कोई क्यों नहीं जी उठते? और उसी शरीर से स्वर्ग को क्यों नहीं जाते? यह मत्तीरचित इञ्जील का विषय हो चुका। अब मार्करचित इञ्जील के विषय में लिखा जाता है।९१।।

(शेष अगले अंक में)

हकीकत को प्राणदण्ड देना कुफर है न्याय नहीं

हकीकत मेरी निगाह में निर्दोष है

इसे मृत्यु या मुसलमान बनाने का दंड देना महापाप है : मुस्लिम जज

लेखक चमन लाल क्षत्रिय
(संपादक वीर सावरकर)

(बाकी का शेष पढ़ें)

लाहौर जेल मं हकीकत राय बंद

स्याल कोट से हकीकत राय को हथकड़ी लगाकर लाहौर जेल भेजा गया। वहां जेलर ने उसे मुसलमान बन जाने के लिए बाध्य किया। यह भी कहा कि यदि तुम मुसलमान न बने तो तुम्हारे माता-पिता का भी जीवन खतरे में पड़ सकता है।

हकीकत ने हंसते-हंसते उसकी धमकीका मजाक उड़ा दिया। मुझे व मेरी माता तथा मेरे पिता जी को मृत्यु का डर नही दिखाओ। तुम्हें विदित होना चाहिए कि हिन्दुओं को शरीर छोड़ते ही तुरंत बिना विलम्ब नया सुंदर स्वस्थ शरीर मिल जाता है बिना किसी प्रतीक्षा के। हिन्दू मरता नही इसका तबादला होता है:

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृहणाति नरोऽपराणि।
तथैव शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।।

जैसे मनुष्य वस्त्रों को त्याग कर दूसरे नए वस्त्र धारण करता है वैसे ही हिन्दू पुराने शरीर को त्याग कर नए शरीर को ग्रहण करता है।

नैनं छिदंति शंस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयत्यापो न शोषयति मारूतः।।

आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते व आग जला नही सकती, जल इसे गीला नहीं कर सकता और हवा सुखा नहीं सकती। हकीकत के इस उत्तर ने जेलर का दिमाग ठिकाने लगा दिया। उसके द्वारा माता-पिता के मारे जाने की दी गई धमकी पर व्यंग करते हुए उसने कहा-जुर्म करे बेटा कैद हो मां-बाप। क्या यही है इस्लाम? क्या यही है इसका इंसाफ।

हकीकत की दिलेराना टक्कर

स्यालकोर्ट से ले जाने के पश्चात हकीकत को हथकड़ियों से जकड़कर लाहौर की स्याल कोर्ट के मैजिस्ट्रेट के समक्ष लाया गया। कोर्ट कक्ष हिन्दुओं और मुसलमानों से खचाखच भरा पड़ा था। जज ने सीट पर बैठते ही हकीकत से कहा क्या तुमने बीबी फातमा को गाली दी थी? हकीकत के कहा जनाव गाली देने की मेरी आदत नहीं है। बीबी फातमा को गाली देने का मुझ पर झूठा आरोप थोपा गया है। धर्म की कसम खाओ तुम सत्य कह रहे हो मैजिस्ट्रेट ने कहा। हकीकत ने कहा- धर्म खाने के लिए नहीं होता। इसे निभाना होता है। धर्म की कसम दृष्ट और झूठ खाया करते हैं। सच्चे और नेक लोग धर्म निभाते हैं। हकीकत के विद्वता तथा निर्भीकता पूर्ण उत्तर ने जज के मन पर अपनी छाप लगा दी। उसकी आत्मा ने हकीकत को मुक्त कर देने की प्रेरणा दी। उसे अपनी इस शुभ इच्छा को दबाना पड़ा-क्योंकि मुहम्मद और कुरान पर आस्था न रखने वाले को छोड़ना शरीयती (इस्लामिक) कानून वाधक था। इस विवशता के उपरांत भी मैजिस्ट्रेट ने आक्रोश पूर्ण दृष्टि से अध्यापक मुल्ला की ओर देखा।

मुख्य अध्यापक का जज से मिलना

अपने मकतब (स्कूल) के पक्ष में मुख्य अध्यापक जी जज से मिले। उसने कहा-हकीकत ने बीबी फातमा को गाली दी थी। शरीयती यानि मुस्लिम कानून के अंतर्गत हकीकत को आप कत्ल का दण्ड दें।यह सुनते ही जज ने कहा-हकीकत की प्रभू द्वारा बनाई गई इस सुंदर स्वस्थ काया को तोड़ने का पाप मजहब

हकीकत अकड़ कर कहे जा रहा है। मैं हिन्दू हूं हिन्दू ही रहूंगा, नवाब साहब तथा लाहौर हाई कोर्ट के जज हकीकत को मुसलमान बन जाने का दबाव दे रहे हैं। और अपनी लड़की की शादी करने का लालच दिया था

की आड़ में मुझसे कराने आप क्यों आए हो? हकीकत ने यदि गाली दी भी थी तो पीट लेनें के उपरांत उसे घर जाने देना था। बच्चो-बच्चों की लड़ाई में शरीयती कानून लागू नहीं होता। छोटी आयु की गलतियां क्षमा योग्य होती हैं।

मुख्य अध्यापक ने अपनी थिरकती आवाज में कहा जनाब जिसे आप बच्चा कह रहे हैं यह सर्प है सर्प। यह तो शैतान का भी बाप है। हमने तो इसे क्लास का मानीटर और अपने सकूल की कबड्डी टीम का कैप्टन नियुक्त किया था। इसने हमारी बीबी फातमा को ही गाली दे दी है। यकीनन यह मृत्यु दण्ड दिए जाने योग्य है। यदि आपने इसे मृत्यु दण्ड न दिया तो सारे मुस्लिम जगत का प्रकोप आपको देखना पड़ेगा। आपके हित के लिए ही मैं आपके पास आया हूं। आपको अपनी व्यक्तिगत राय के अनुसार निर्णय देने का कोई अधिकार नही है। यह मुस्लिम शासन है। शरीयती कानून के अनुसार हकीकत को मुसलमान बनना पड़ेगा या इसका सर तलवार से उड़ाया जाएगा ताकि किसी भी हिन्दू को फातमा को गाली देने का साहस ही न हो सके। मुस्लिम जगत में बढ़ रहे जोश को देखते हुए जज साहिब ने यह केस लाहौर की बड़ी कोर्ट में भेज दिया। हकीकत राय को जज से मृत्यु दण्ड दिलाने के इच्छुक हाथ ही मलते रह गए।

बड़ी कोर्ट के बड़े प्रेरक नजारे

हकीकत राय लाहौर की बड़ी कोर्ट में खड़ा था। जज ने बड़े ही गौर से उसके चेहरे की ओर देखा। ईश्वरीय रूप था उसके मुख पर। अपार संतोष दीख रहा था उसके चेहरे पर। पांच मिनट तक जज उसके चेहरे के आवभाव देखता रहा। समझ गया निर्दोष बालक को यह मरवाना चाहते हैं।

आक्रोश पूर्ण ढंग से जज साहब ने अध्यापक मुल्ला से पूछा तुम अध्यापक हो या मुल्ला? तुम न तो इस्लाम के रक्षक मुल्ला हो औरन ही छात्रों को बच्चे तुल्य समझने वाले अध्यापक हो। दांत पीसते हुए बड़ी ही कस्क से जज ने कहा तुम तो जल्लाद हो। लाहौर से स्याल कोर्ट तक के हिन्दुओं-मुसलमानों में खिचाव पैदा कर दिया है तूने। तेरी कर्तूत ने हिन्दुओं को इस्लाम विरोधी बना दिया है। मुल्ला अध्यापक ने कम्पित आवाज में कहा-जनाब हकीकत बड़ा ही शरारती है। इसने बीबी फातमा की शान में अपशब्द प्रयोग करके इस्लाम की आन को चुनौति दी है।

जज साहब ने मुल्ला से कहा-झूठ मत बोलो, यह लाहौर की अपर कोर्ट है। मैंने केस की फाइल देखी है। यदि हकीकत शरारती झगड़ालू है तो नीचे की कोर्ट में तुमने इसे नेक शिष्ट और पढ़ाई में तेज कैसे माना? इसके द्वारा स्कूल में किए गए किसी झगड़े का तूने कोई निचली कोर्ट में व्यौरा नहीं दिया। यह शरारती है तो तूने इसे मानीटर और कैप्टन क्यों बनाया था? जिसे गाली देने की आदत ही नहीं उस पर गाली देने का लगाया गया तेरा आरोप क्यों ठीक माना जाए तुम ही बताओ?

जज साहब के इन प्रश्नों ने मुल्ला अध्यापक के पांवों से भूमि ही खींच ली। उसे जज ने पूछा-जब गाली हकीकत ने दी थी तुम कहां थे? तुमने लड़कों की बात कैसे मान ली? विदित होता है कि तुम्हें हिन्दुओं से चिढ़ है मेरे विचार में तो तुम हो:-

"नीम मुल्ला खतरा इमान
नीम हकीम खतरा जान।"

मुल्ला के साथ आए मुसलमानों को डांटते हुए जज ने कहा यहां क्यों आए हो? तुम्हारी करतूतों ने ही हिन्दुओं को मुसलमानों के विरोध में खड़ा कर दिया है। तुम्हारी यह करतूत न इस्लाम के पक्ष की है और न ही शासन के पक्ष की। विनम्र और शिष्ट को उत्तेजित कर देना अपने ही शासन में विद्रोह खड़ा कर देने की मूर्खता करना है। धक्के शाही से तुमने बालक हकीकत राय को मौत के जब्डे में धकेल रखा है। हर बात में इस्लाम खतरे में है का नारा लगाने का ही परिणाम है इतनी भारी संख्या में विनम्र प्रवृत्ति के हिन्दू सर पर कफन बांध यहां आए हैं।

तुम ही बताओ यह राज्य हिन्दू राज्य होता और तुम्हारे बच्चे को हकीकत की तरह फंसा लिया जाता तो हिन्दू शासन के विषय में क्या कहते? खुदा से दुआ करो कि तुम्हारी कोम में भी हकीकत जैसे निर्भीक, उदार तथा व्यवहार में मृदु एवं न्याय युष्त प्रवृत्ति के बच्चे एवं युवक हों। मुल्ला जी तुमने तो मुस्लिम छात्रों को पढ़ाने के स्थान पर लड़ना और झगड़ना ही सिखलाया है। यदि मैं हकीकत को मृत्यु दण्ड दे दूं तो क्या इस्लाम का रुतबा बढ़ जाएगा? खुदा की निगाह में मेरा यह कृत्य और आपका मंशा कुफन नहीं होगा क्या?

हकीकत को प्राण दण्ड देना, कुफर है-न्याय नहीं है।

हकीकत मेरी निगहा में निर्दोष है। इसे मृत्यु या मुसलमान बनने का दण्ड देना महा पाप है। इसे दण्डित करने के स्थान पर तुम्हें दण्डित करना चाहता हूं। यदि में ऐसा कर दूं तो तुम सभी कहोगे कि मैं पूर्व का हिन्दूं हूं, इसीलिए हिन्दू हकीकत को प्राणदण्ड नहीं दिया और मैंने मुसलमानों को दण्डित कर दिया है। यह देखने को मुसलमान है पर मन से यह हिन्दू ही है कहोगे। मुख्य अध्यापक तथा कोर्ट में खड़े मुसलमानों ने जज साहब से कहा-आप तो उपदेश दिए जा रहे हो, इसे बंद करो। मुसलमानों की कृपा से आप जज बने हैं। अतः शरीयती कानून द्वारा हकीकत ो मुसलमान बना कर इस्लाम की वृद्धि का श्रेय प्राप्त करें। हिन्दुओं का पक्ष लेना हानि कारक सिद्ध होगा। मस्जिद में जमायत करके आपको काफिर घोषित कर देंगे। आप जिस कानून के रक्षक हैं वह है शरीयती कानून। इमान के रक्षक हैं। काफिर घोषित होते ही संगसार यानि पत्थर मार-मार कर मार दिए जाओगे। हकीकत का पक्ष लेते-लेते अपनी ही जान न खतरे में डाल लेना। जज साहब बड़े ही उदार ह्रदय के थे। उन्होंने मौलवियों और मुल्लाओं के जमघटे की जली कटी सब बातें पुरे धैर्य से सुनी। सबको शांत किया। हकीकत से कहा अपनी जिद छोड़ दो मुसलमान बन जा। अपनी लड़की से तेरा विवाह करा दूंगा। धन दौलत से मालदार बन जाओगे। मुस्लिम शासन में मेरी भांति उच्चतम पद प्राप्त करके सुखी जीवन व्यतीत करोगे। जीवित रहोगे तो माता-पिता तुम्हें देख लिया करेंगे। तेरी पत्नी विधवा होने से बचेगी। यूंही जान गवा देना बुद्धिमता नहीं है। मेरा कहना मान लो।

(शेष अगले अंक में पढ़ें)

वसंत पंचमी पर वीर बालक हकीकत राय को किया याद

निरेंद्र गौतम (जालंधर)

भारत माता के महान सपूत वीर बालक हकीकत राय जी के बलिदान दिवस पर समिति के कार्यालय में हिंद सेवा समिति की ओर से पुष्पांजलि भेंट की गई व उनकी ओर से दिखाए गए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया गया।

जिला भाजपा के पूर्व प्रधान शिव दयाल चुघ ने कहा कि वीर बालक हकीकत राय जी के बलिदान से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। समिति के प्रधान सुनील शर्मा ने कहा कि ऐसे बलिदानी बालक को हम सब नमन करते हैं जिसके यह शब्द आज भी हमारे कानों में गूंजते हैं। मैं संसार को तो छोड़ सकता हूं पर धर्म को नहीं।

भाजपा नेता रजत महेंद्रू, श्री सिद्ध बाबा सोढ़ल मंदिर के ट्रस्टी अविनाश चड्डा ने कहा कि वीर बालक की कुर्बानी को कभी भुलाया नहीं जा सकता। वह धर्म के सच्चे प्रहरी थे।

कांग्रेस नेता यश पहलवान, बब्बू थापर ने कहा कि देश को गर्व है जिसके वीर योद्धाओं ने शहादत का जाम पीया, वहीं साहसी बालक मात्र 14 वर्ष की आयु में धर्म की रक्षा करते हुए शहीद हो गयाद्ध समिति के शम्मी कन्नौजिया, मनोज थापर, राजेश शर्मा, महिंद्र लाल शर्मा, प्रिंस शर्मा, सूरज शेखर, सीता राम आदि धर्मप्रेमियों ने भी वीर बालक हकीकत राय को श्रद्धासुमन भेंट किए।

वीर हकीकत राय बलिदान दिवस मनाया गया जालंधर में

अखिल विश्व गीता महा मण्डलकी ओर से वीर हकीकत राय बलिदान दिवस पर पं. केवल कृष्ण शर्मा ने वीर हकीकत राय के चरणों में श्रद्धा के पुष्प अर्पित करते हुए कहा कि देश के सभी धार्मायायओं वीर हकीकत राच के जीवन की उपेक्षा कर नई पीढ़ी को राष्ट्र से विमुख कर दिया है और नई पीढ़ी चरित्रहिन्ता की ओर चली गई है जिससे सारा देश पतन की ओर जा रहा है। पं. रविशंकर शर्मा ने श्रद्धा के पुष्प अर्पित करते हुए बताया की अखिल विश्व गीता महामण्डल 48वें स्थापना दिवस भी मनाये पं. लक्ष्मी नारायण कुपारिय, मुन्ना लाल शर्मा, लाला पंडित उमेश शर्मा, मुराली लाल, हरीओम सुनार, पं. श्याम सुंदर शर्मा ने भी विचार रखे।

लोनी में वसंत पंचमी पर हवन एवं वीर हकीकत राय के बलिदान दिवस पर भण्डारा किया गया

शांति नगर सात मंजिला मंदिर के प्रागण में महंत राजकुमार कौशिक जी महाराज की अध्यक्षत में वसंत पंचमी वाले दिन एक हवन यज्ञ द्वारा अग्नि को रिचाए दी तथा दूसरे दिन विशाल भण्डारे का वितरण किया गया। कौशिक जी महाराज ने कहा कि देश के महान पुरुषों ने आन-मान-शान रखी उन महा पुरुषों का जीवन सभी राजनीतिक दल तथा सरकार उपेक्षा कर रही हैं जिसकी महंत जी ने कड़ी आलोचना की है।

कांग्रेस का दोहरे चरित्र से मुस्लिम महिलाओं का हुआ आपमान

सभी राजनीतिक दल घिनौना खेल रहे हैं

तीन तलाक पर होती राजनीति को देश देख रहा है। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर केंद्र सरकार तीन तलाक पर कानून बनाने के लिए लोकसभा में बिल लेकर आयी। लोकसभा में सत्तारुढ़ दल बीजेपी का बहुमत है, इसीलिए लोकसभा में बीजेपी सरकार ने तीन तलाक के बल को पास करा लिया। कांग्रेस ने कुछ सुझाव देते हुए बिल पास कराने में अपना समर्थन दिया। लोकसभा में बिल पास हो गया। लेकिन वो ही बिल राज्यसभा में आकर फंस गया। कारण साफ राज्यसभा में बीजेपी का बहुमत नहीं है, जिस वजह से तीन तलाक बिल राज्यसभा में आकर अटक गया। महत्वपूर्ण बात यह रही कि जिस कांग्रेस ने लोकसभा में बिल पास कराने में अपना समर्थन दिया था, उसी कांग्रेस ने उसी बिल पर राज्यसभा में अपना समर्थन नहीं दिया और सफाई देते हुए कहा कि कांग्रेस तीन तलाक बिल के विरोध में नहीं है। लेकिन बिल को प्रवर समिति के पास भेजने की मांग को लेकर विपक्ष ने इतना हंगामा मचाया कि राज्यसभा की कार्यवाही तक स्थगित करनी पड़ी। पांच जनवरी को संसद के शीतकालीन सत्र के आखिरी दिन भी सरकार ने राज्यसभा से बिल पास कराने की कोशिश की गयी, लेकिन सरकार की सभी कोशिश बेकार गयी। शीतकालीन सत्र समाप्त हो गया और तीन तलाक का बिला लोकसभा से चलकर राज्यसभा में आकर फंस गया। राज्यसभा में सभी विपक्षी दल बिल को प्रवर समिति के पास भेजने की मांग पर अड़े रहे, जिसका सरकार विरोध करती रही। इसी उठा पटक के बीच सत्र समाप्त हो गया और बिल फंस गया। संसद अपने कामकाज निपटाने के लिए कई तरह की समितियों का गठन करती है। संसदीय समितियां दो तरह की होती है, प्रवर और स्थायी। प्रवर समिति का गठन किसी खास मामले या उद्देश्य के लिए किया जाता है। रिपोर्ट सदन में प्रस्तुत कर दिए जाने के बाद उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है। स्थायी समिति का काम निश्चित होता है। विपक्ष बिल को प्रवर समिति के पास भेजने की मांग पर अड़ा रहा, और सरकार बिल को पास कराने की जिद पर अड़ी रही। आखिर जो बिल संसद में पास हो गया और जिसे पास कराने में कांग्रेस ने भी अपना समर्थनदिया। उसी कांग्रेस ने राज्यसभा में आखिर क्यों बिल को अपना समर्थन नहीं दिया।

कारण साफ है, कांग्रेस जानती थी कि लोकसभा में किसी का विरोध नहीं चलेगा, क्योंकि बीजेपी बहुमत में है, इसलिए कांग्रेस ने भी लगे हाथों वाह-वाही लूटने की खातिर बल को पास कराने में अपना समर्थन दियाद्ध वहीं राज्यसभा में कांग्रेस ने राजनीति खेलते हुए बिल का समर्थन न करते हुए बिल को प्रवर समिति के पास भेजने की मांग की। अगर राज्यसभा में भी बीजेपी का बहुमत होता तो कांग्रेस यहां भी बिल का समर्थन करती। लेकिन बीजेपी के पास बहुमत न होने का फायदा उठवाते हुए कांग्रेस ने बिल को कानून बनने की राह में रोड़ा अटका दिया। २45 सदस्यीय राज्यसभा में सत्तारूढ़ राजग के पास 88 सांसद हैं। इनमें अकेले भजपा के पास 57 सांसद हैं। कांग्रेस के पास 57, सपा के 18, बीजद के 8, अन्नाद्रमुक के 13, तृणमूल के 1२ और राकांपा के पास 5 सांसद हैं। उच्च सदन से विधेयक को पारित कराने के लिए सरकार को 1२3 सांसदों के समर्थन की जरूरत होगी। सरकार को सभी सहयोगी दलों का साथ मिलजाता है, तो भी उसे 35 और सांसदों को समर्थन जुटाना होगा। जब तक राज्यसभा में बीजेपी का बहुमत नहीं होगा, तब तक हर वह बिल राज्यसभा में लटकता रहेगा जिसे सरकार पास कराना चाहेगी देश की ९ करोड़ मुस्लिम महिलाओं को तीन तलाक से मिली आधी-अधूरी आजादी आखिर किस काम आएगी। कांग्रेस का लोकसभा में बिल को पास कराना और राज्यसभा में उसी बिल को प्रवर कमेटी के पास भेजने की मांग को लेकर अटका देना, कांग्रेस के दोहरे चरित्र को दर्शाता है। कांग्रेस का दोहरा चरित्र ही उसके लिए भस्मासुर का काम कर रहा है। बीजेपी ने राज्यसभा में तीन तलाक बिल पास कराने के लिए हर संभव कोशिश की। लेकिन कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों ने जिस तरह बिल को लटका दिया। उससे साफ जाहिर है कि कांग्रेस और अन्य विपक्षी दल कभी भी तीन तलाक के बिल को पास नहीं होने देंगे और जब तक तीन तलाक का बिल कानून में तब्दील नहीं हो जाता, तब तक ९ करोड़ मुस्लिम महिलाओं को तीन तलाक जैसे घातक अधिकारों का शिकार होते रहना पड़ेगा।

लेखक-अनिल वर्मा

लोनी प्रशासनिक अधिकारियों ने सैकड़ों फैक्ट्रियां सील की

स. महेंद्र सिंह

लोनी। अब तक जींस रंगाई की फैक्ट्रियों को प्रशासन अधिकारी सील कर चुके हैं अब एस.डी.एम. की निगरानी में पुलिस तथा बिजली विभाग के साथ सी.ओ एवं भू सर्वेक्षण अधिकारियों के साथ कृष्णा विहार में अवैध रूप से चल रही पीतल, कापर ढलाई तथा टी.वी. प्लेट गलाने वाली 17 फैक्ट्रियों में छापा मार कर बिजली कनेक्शन काट कर सील कर दिया है प्रशासन ने निर्देश भी दिया है कि जब तक नगर पालिका तथा प्रदूषण विभाग से एनओसी न हो जाये तब तक फैक्ट्री मालिकों को बिजली कनेक्शन नहीं दिया जायेगा।

हिन्दुओं का खून खौल उठा

अलाउद्दीन के दरबार में पद्मनी की चर्चा

लेखक वीर सावरक संपादक चमन लाल क्षत्रिय

अलाउद्दीन का दरबार चल रहा था। नाच-गानों की महफिल गर्म थी। एक दरबारी ने चित्तौड़ के राणा रत्नसिंह की पत्नी पद्मिनी की सुंदरता का वर्णन करते हुए कहा कि आज की दुनिया में यह सबसे अधिक सुंदर औरत है। ऐसी सुंदरी तो आप के पास होनी चाहिए। वासनाओं का मारा हुआ अलाउद्दीन पद्मिनी की चर्चा सुनते ही अधीर हो उठा। इसे प्राप्त कर लेने का अपने दृढ़ संकल्प कर लिया। इसी सोच में अपने महल में जा पहुंचा। कमला देवी जिसे मलकाए आजम कहा करता था ने अलाउद्दीन से पूछा आज आप क्यों खोए-खोए हुए हो। इस पर उसने कहा मैं विश्व की सबसे अधिक सुंदरी महारानी पद्मिनी को पाना चाहता हूं।

उसकी सुंदरता की चर्चा आज दरबार में सभी ने की। मेरा मन व चित उसी के लिए व्याकुल हुआ जा रहा है। मलकाए आजम ने यह सुनते ही उससे कहा- पद्मिनी मेरे जैसी दुष्ट नहीं है। आपके अत्याचारों को सहन न कर सकने के कारण मैंने तो अपने को आपके हाथों में समर्पित कर रखा है। हजारों अपने सैनिकों को मरवा लेने के पश्चात भी आप उसको प्राप्त न कर सकोगे। वह प्राण तो दे सकती है पर आपको अपना शरीर छू लेने का भी अवसर नहीं देने की। जहां उसकी सुंदरता की चर्चाएं आपनेसुनी है वहां उसकी रण कुशलता को भी तो सुना होगा। हाथों में सशौर्य तलवार लेकर वह स्वयं भी युद्ध करने में सक्षम है। इस किए गए संकल्प को छोड़ों। अन्यथा महान विनाश की कारण आपको बनना पड़ेगा। और आप अपने इस्लाम की भी अपकीर्ति करा बैठोंगे। अपने आपको इस्लाम का प्रेरक कहते हैं। मेरे विचार में तो किसी की नारी को छीनने हेतु युद्ध करनेकी इजाजत कोई भी मत नहीं देता। पर आप तो इस्लाम के कट्टर बंदे हो- जो चाहो सो करोः मैं आपके मार्ग में कोई अवरुधता नहीं बनती। जो ठीक है मैं कहे देती हूं कि आपकी इस करतूत से विश्व के नैतिक इतिहास में आपको एक लुटेरा और वासनाओं का मारा हुआ लिखा जाएगा।

आपके चाचा ने आपको पाला-पोसा। उसी की लड़की को फांस कर उससे निकाह कर लिया। फिर अपने चाचा को ही कत्ल करके दिल्ली के तख्त पर आरूढ़ हुए हैं। क्या इतिहास इसे गाएगा नहीं? पद्मिनी मेवाड़ की महारानी है। मेवाड़ से टक्कर लेना कोई मामूली बात नहीं है। यह करतूतें आपको कलंकित भी करेंगी औरआपकी सैनिक शक्ति को भी तोड़ेगी। पद्मिनी के विचार को छोड़ देने के सुझाव को अलाउद्दीन सहन न कर सका। क्रोध से भड़क उठा। तुम मेरे सुख-दुख की सहचरी होकर भी मेरे मन में हीनता लाने के लिए दूसरों की कीर्ति का बखान क्यों करती हो, उसने कहा।

अपार थैपै से उसको इस मलकाए आजम ने कहाआपको न समाज का भय ह और न ही खुदा के कहर का। अपनी अनैतिक वृत्ति को इस्लाम से क्यों जोड़कर अपने को बचाना चाहते हैं? दूसरों की औरतों को छीन लेना इस्लाम कीसेवा नहीं यह तो सर पर सवार हो चुके शैतान की आज्ञा का पालन करना है। मेरा कहना कर्तव्य था मैंने निभा दिया है। इस पर कुद्ध होते हुए अलाउद्दीन बोला- बहादुरों को अपनी तलवार पर भरोसा होता है। भगवान औरसमाज की कृपा की जरूरत बहादुरों को नहीं होती है।

(शेष अगले अंक में)

(महारानी पदमिनी किताब से है)

पाकिस्तान का निर्माण हिन्दू एवं मुसलमानों के धार्मिक वैमनस्य के आधार पर हुआ था। जब पाकिस्तान के सारे कार्यकलाप भारत एवं हिन्दू विरोधी होते आ रहे हैं

लेखक-विशन चन्द्र सेठ (सांसद हिंदू महासभा) (अगले अंक का शेष)

शासन द्वारा आरंभ से ही इस प्रकार के अनेक आवश्यक निर्णय समय पर न लेने से भारतीय जन-जीवन दुखद एवं चिंतनीय बन गया। उदाहरण के लिये कुछ बातें ऊपर अंकित की गयी। पाकिस्तान का निर्माण हिन्दू एवं मुसलमानों के धार्मिक वैमनस्य के आधार पर हुआ था। जब पाकिस्तान के सारे कार्यकलाप भारत एवं 'हिन्दू विरोधी होते आ रहे हैं। फिर भारतीय शासन के सम्मुख मुस्लिम-परस्ती को उत्साहित करने का मुझे कोई भी कारण प्रतीत नहीं होता।

प्रजातंत्र का सत्य स्वरूप

लम्बे समय से मेरे मन में यह संसार-व्यापी प्रश्न उद्वेलित हो रहा था कि आजकल प्रायः सभी देश एवं राज्य अपने को प्रजातांत्रिक कहते हैं। प्रजातंत्र शब्द का तो सीधा अर्थ यही बनता है कि संबंधित देश में समाज के सभी वर्गों का शासन में समावेश हो।पर जो पद्धति इस समय संसार-व्यापी स्तर पर चल रही है उसमें तो पार्टी विशेष जीतने पर शासन अपने हाथों लेती है। इसका तो सत्यता से यह अर्थ बनता है कि जिसे आज प्रजातंत्र कहा जाता है उसे पार्टी-तंत्र कहना उचित प्रतीत होता है। निःसंदेह पार्टी विशेष को बहुमत प्राप्त होने पर ही शासन करने का अधिकार होता है। परंतु इस प्रश्न से इंकार करना तो हठधर्मी होगी कि पार्टी विशेष पूरे देश का प्रतिनिधित्व कर रही है। वह शासन तो सत्यता से विशेष विचारधारा के सज्जनों अथवा समूह का ही होता है। अन्य देशों को अपनी सुविधा अनुसार शासन चलाने का स्वाभाविक अधिकार है परंतु मेरा निश्चित विचार है कि भारतीय शासन को इस मौलिक भूल को सुधार कर संसार के समक्ष नवीन कीर्तिमान उपस्थित करना चाहिये।

इस नवीन व्यवस्था हेतु केंद्रीय लोकसभा और विशिष्ट सज्जनों द्वारा गठित राज्यसभा द्वारा ही पूरे देश का शासन चलाने की व्यवस्था बनानी होगी। प्रांतों में राज्यपाल महोदय हेतु नव गठित परामर्श-दात्री समितियों का नवीन (विधानसभा सरीखा) किया जायेगा जो केंद्रीय शासन के आदेशानुसार प्रांतीय आवश्यकताओ एवं सुविधाओं के आधार पर शासन चलाने का उत्तरदायित्व ग्रहण करेगी साथ ही लोकसभा एवं राज्यसभा के सांसदों की संख्या सनगणना एवं आवश्यकता के आधार पर पुनः नवीन निर्धारित करनी होगी।

जब भी इस पुस्तक में अंकित विचारों के आधार पर भारत में शासन व्यवस्था बने उस समय के मनीषी सज्जनों को नीचे अंकित विचारों पर ध्यान देना अपेक्षित होगा। देश के सभी क्षेत्रों के पदाधिकारी चाहे वे शासकीय राजनैतिक, सामाजिक अथवा धार्मिक क्षेत्र के हों, किसी भी स्थिति में किन्हीं भी सज्जनों को दो पदों का भार ग्रहण करने का अधिकार न होगा, ऐसी व्यवस्था मान्य करने से अनेकों नवीन सज्जनों को देश सेवा करने का अवसर प्राप्त होगा और कार्य व जिम्मेदारी विभाजन से देश के सभी क्षेत्रों की व्यवस्था सुगमता से चलेगी।

आज तो भरत में सर्वत्र यह अनहोनी स्थिति चल रही है कि प्रांतीय केंद्रीय मंत्री एवं अधिकारियों को नियमित कार्य के अतिरिक्त अनेक कार्यों को जिम्मेदारी भी दे दी जाती है। सत्यता से वे उन जिम्मेदारियों की पूर्ति करने में समर्थ तो होते नहीं बरबस मीटिंगें आयोजित होने पर केवल कागजी संतोष मात्र किया जाता है। इसका निराकरण समय की आवश्यकता है।

ठीक यही स्थिति जिलास्तरपर प्रमुख जज महोदय और जिलाधीश को भी होती है। क्रमशः न्यायालय का कार्य तो जज महोदय की और जिले की व्यवस्था संचालन जिलाधीश की प्रथम जिम्मेदारी होती है। फिर उनके जिम्मे विभिन्न ट्रस्ट, जनता के अनेक संस्थान आदि सौपें जाते हैं।वे सभी कार्य जैसा कि ऊपर अंकित है कागजों तक सीमित रह जाते हैं।समय एवं मनोयोग देने की इन अधिकारियों की न तो रुचि और न सुविधा ही होती है। इस स्थिति में मेरा वैचारिक मत है कि हर जिले में दो जिलाधीश होने चाहिये, एक शासकीय कार्यभारत का उत्तरदायित्व ग्रहण करे और दूसरा जिलास्तर पर विभिन्न कार्यों, उत्सवों और खेलों, सम्मान वितरण आदि जिनमें समाज का मनोरंजन एवं शासन के प्रति प्रभाव और आकर्षण बनता है, उसे पूर्ण करें।ऐसा होने से जज महोदय और शासकीय जिलाधीश अपने कर्तव्य का स्वतंत्र सफल कार्य करने में समर्थ बनेंगे। साथ ही चुनाव क्षेत्रों में किसी भी सज्जन को केवल मात्र एक स्थान पर खड़े होने का अधिकार हो।

यदि किसी विशेष परिस्थितिवश कोई सज्जन दो स्थानों से खड़े होने की महती आवश्यकता अनुभव करें तो उन्हें इलैक्शन कमीशन को अपनी आवश्यकता की महत्ता प्रकाशित करते हुए प्रार्थना पत्र देना अनिवार्य हो। कमीशन की स्वीकृति उपरांत हो वे दो स्थानों पर खड़े होने में समर्थ बनें। इलेक्शन कमीशन का निर्णय अंतिम माना जाये और किसी भी स्तर पर उसे चैलेंज करने का किसी को अधिकार न हो।

मानव जीवन यात्रा स्त्री-पुरुष दोनों के प्राकृतिक सहयोग से ही परिवार समाज एवं देश में चलती आयी है। अतः सभी राजनैतिक, शैक्षिक, सामाजिक, धार्मिक संगठनों आदि क्षेत्रों में स्त्रियों को सम्माननीय प्रतिनिधित्व देने की परंपरा बनानी होगी।ऐसा करने से भारत की असीम शोभा के साथ स्त्रियां अपने उत्तरदायित्व का देशव्यापी स्तर पर भार ग्रहण करने में समर्थ बनेंगी।

लोकसभा एवं राज्यसभा हेतु निधारित संख्या के सांसदों में आधे सज्जन चुनाव द्वारा लिये जायें और आधी मात्रा जन-प्रतिनिधियों के रूप में मनोनीत किये जायें। इस प्रकार की नवीन व्यवस्था को यदि भारत ने मान्य किया तो इसे यह कहने का अंतर्राष्ट्रीय गौरव प्राप्त होगा कि भारत में वस्तुतः प्रजातंत्र शासन सफलता से चल रहा है। उपरोक्त नवीन व्यवस्था को मान्य करने के उपरांत हमें सर्वप्रथम देश के विभिन्न प्रांतों का अनिवार्य नवगठन करना होगा। कारण आज उ.प्र. भी जनसंखय लगभग 14 करोड़ है। बिहार एवं म.प्र. की जनसंख्या और क्षेत्रफल में काफी बड़े हैं। उसके विपरीत भारत के सीमावर्ती प्रांत अत्यंत ही छोटे गठित किये गये हैं जो शासकीय व्यवस्था की दृष्टि से पूर्णतया अनुचित और अव्यावहारिक है।

(शेष अगले अंक में)

(भारतीय शासन की विकृतियां और निदान किताब से लिया गया है)

आज स्त्रियों को उनके कर्तव्य से विमुख करके अनेक झंझट में फंसाया जा रहा है

लेखक-के.एल. लूथरा

(अगले अंक का शेष)

इससे जीवन निर्वाह के साधनों में कमी आने लगती है। इतना ही नहीं, अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिये मनुष्य तरह-तरह के पाप करने लगता है, जिसमें गर्भपात आदि संतति-निरोध के उपाय भी शामिल हैं। गीता ने काम अर्थात् भोगेच्छा को सम्पूर्ण पापों का मूल बताया है-

काम एवं क्रोध एवं रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्।।

रजोगुण से उत्पन्न हुआ यह काम ही क्रोध है। यह बहुत खाने वाला और महापापी है। इस विषम में तू इसको ही वैरी जान। भोग-विलासकी चीजों को मनुष्य ने अपनी आवश्यक चीजें बना लिया है। वह उन चीजों के इतने अधीन हो गया है कि उनके बिना उसको अपना जीवन भी भारी लगने लगा है, जिसका कारण आलस्य, प्रमाद और आरामतलबी है। जब उसके लिये अपनी जरूरतों को पूरा करना भी कठिन हो गया है, तो फिर वह अपनी संतान की जरूरतों को कहां तक पूरा करें। अतः उसने संतति-निरोध के उपायों को काम में लाना शुरू कर दिया है। उसमें काम-वासना भी इतनी बढ़ गयी है कि उसने स्त्री को मात्र भोग सामग्री बनाना तो ठीक समझा है, पर भोग के प्राकृतिक परिणाम-संतान का होना ठीक नहीं समझा है। वह यह विचार तो करता है कि संतान न होने से स्त्री अधिक समय तक युवा बनी रहेगी, हमारे भोग के योग्य बनी रहेगी, पर यह विचार नहीं करता कि लाख कोशिश करने पर भी जवानी के बाद बुढ़ापा आयेगा ही और बुढ़ापे के बाद मौत आयेगी ही, जो कि अनिवार्य है। उसके ह्रदय में न तो ईश्वर का विश्वास रहा है, न अपने भाग्य का विश्वास रहा है और न अपने पुरुषार्थ (कर्तव्य) पर ही विश्वास रहा है। तात्पर्य है कि ईश्वर सबका पालन करने वाला है, हरेक व्यक्ति अपने भाग्य के अनुसार पाता है और अपने पुरुषार्थ (उद्योग) से मैं कमा सकता हूं- इन बातों पर से मनुष्य का विश्वास हट गया है। इन सब कारणों से परिवार नियोजन कार्यक्रम का तेजी से प्रचार एवं प्रसार हुआ और हो रहा है।

क्या परिवार-नियोजन आवश्यक है?

जनसंख्या वृद्धि से होने वाली जिन हानियों का प्रचार किया जा रहा है, वह केवल कपोल-कल्पना है, उसमें वास्तविकता की बात ही नहीं है। परिवार-नियोजन के समर्थक कहते हं कि जनसंख्या बढ़ने पर अन्न की कमी हो जायेगी, जिससे सबको भरपेट अन्न नहीं मिल सकेगा। यह बात तो तभी लागू पड़ती है, जब अन्न एक निश्चित मात्रा में जमा रखा गया हो और आगे अन्न पैदा होने की गुंजाइश न हो। जनसंख्या की वृद्धि को लेकर अन्न की चिंता करने वाले लोग यह भूल जाते हैं कि जनसंख्या बढ़ने से केवल खाने वाले ही नहीं बढ़ते, प्रत्युत पैदा करने वाले (कमाने वाले) भी बढ़ते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के पास केवल पेट ही नहीं होता, प्रत्युत दो हाथ, दो पैर और एक मस्तिष्क भी होता है, जिनसे वह केवल अपना हीनहीं प्रत्युत कई प्राणियों का भरण-पोषण कर सकता है। वास्तव में अन्नादि वस्तुओं की कमी तभी आ सकती है, जब मनुष्य काम न करें और भोगी, ऐयाश, आरामतलब हो जायं। आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। अतः जब जनसंख्या बढ़ेगी, तब उसके पालन-पोषण के साधन भी बढ़ेंगे, अन्न की पैदावार भी बढ़ेगी, वस्तुओं का उत्पादन भी बढ़ेगा, उद्योग भी बढ़ेंगे। जहां तक हमें ज्ञात हुआ है, पृथ्वी में कुल सत्तर प्रतिशत खेती की जमीन है, जिसमें केवल दस प्रतिशत भाग में ही खेती हो रही है। जिसका कारण खेती करने वालों की कमी है। अतः जनसंख्या की वृद्धि होने पर अन्न की कमी का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। यदि भूतकाल को देखें तो पता लगता है कि जनसंख्या में जितनी वृद्धि हुई है, उससे कहीं अधिक अन्न के उत्पाद में वृद्धि हुइ है। इसलिये जे.डी. बर्नेल आदि विशेषज्ञों का कहना है कि जनसंख्या में वृद्धि होने पर भी आगामी सौ वर्षों तक अन्न की कमी की कोई संभावना मौजूद नहीं है। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री कोलिन क्लार्क ने तो यहां तक कहा है कि अगर खेती की जमीन का ठीक-ठीक उपयोग किया जाय तो वर्तमान जनसंख्या से दस गुनी ज्यादा जनसंख्या बढ़ने पर भी अन्न की कोई समस्या पैदा नहीं होगी (पापुलेशन ग्रोथ एण्ड लिविंग स्टैण्डर्ड)। सन् १८८० में जर्मनी में जीवन-निर्वाह के साधनों की बहुत कमी थी, पर उसके बाद चौंतीस वर्षों के भीतर जब जर्मनी की जनसंख्या बहुत बढ़ गयी, तब जीवन-निर्वाह के साधन और कम होने की अपेक्षा इतने अधिक बढ़ गये कि उसको काम करने के लिये बाहर से आदमी बुलाने पड़े। इंग्लैंड की जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि होने पर भी वहां जीवन-निर्वाह के साधनों में कोई कमी नहीं आयी। यह प्रत्यक्ष बात है कि संसार में कुल जनसंख्या जितनी बढ़ी है, उससे कहीं अधिक जीवन-निर्वाक के साधन बढ़े हैं।

परिवार-नियोजन के समर्थन में एक बात यह भी कही जाती है कि जनसंख्या बढ़ने पर लोगों को रहने के लिये जगह मिलनी कठिन हो जायेगी। विचार करें, यह सृष्टि करोड़ों-अरबों वर्षों से चली आ रही है, पर कभी किसी ने यह नहीं देखा, पढ़ा या सुना होगा कि किसी समय जनसंख्या को नियंत्रित रखना और उसके जीवन निर्वाह का प्रबंध करना मनुष्य के हाथ में नहीं है, प्रत्युत सृष्टि की रचना करने वाले भगवान के हाथ में है। भगवान कहते हैं-

गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा।

मैं ही पृथ्वी में प्रविष्ट होकर अपनी शक्ति से समस्त प्राणियों को धारण करता हूं।

यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः।।

वह अविनाशी ईश्वर तीनों लोकों में प्रविष्ट होकर सबका भरण-पोषण करता है। ब्रिटिश एसोसिएशन के अध्यक्ष सर विलियम क्रोक्स ने भी सन् १८९८ में आज की तरह यह चेतावनी दी थी कि जनसंख्या-वृद्धि के कारण पृथ्वी में जीवन निर्वाह के साधन आगामी तीस वर्षों से अधिक हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकेंगे। अतः इंग्लैंड आदि देशों को शीघ्र ही अकाल का सामनाकरना पड़ सकता है। परंतु आगामी तीस वर्षों में अकाल पड़ना तेत्रदूर रहा, अन्न की इतनी अधिक पैदावार हुई कि उसके भावों में अत्यधिक मंदी आ गयी, जिसके कारण अमेरिका आदि कुछ देशों को अपना अधिक गेहूं जलाकर अथवा समुद्र में डालकर नष्ट कर देना पड़ा।

वर्तमान में करोड़ों एकड़ जमीन खाली पड़ी है। अतः जनसंख्या-वृद्धि को लेकर यह हल्ला करना व्यर्थ है कि भविष्य में लोगों को खाने के लिये अन्न और रहने के लिये जगह नहीं मिलेगी। भारत की तो प्राकृतिक संपति इतनी है कि वर्तमान जनसंख्या से दुगुनी अधिक जनसंख्या हो जाय तो भी सबका जीवन निर्वाह हो सकता है। भारत की प्राकृतिक संपत्ति संसार में सबसे अधिक है। जितनी चीजें यहां पैदा होती हैं, उतनी अन्य किसी भी देश में पैदा नहींहोतीं। अगर जनसंख्या कम हो जायगी तो उनका उत्पादन कौन करेगा? कारण कि जनसंख्या में कमी होने से अन्न आदि का उत्पादन करने वाले कुशल व्यक्तियों का, उत्पादन करने की शक्तियों का और उत्पादन करने के साधनों का भी अभाव हो जाता है। यदि सरकार जनसंख्या वृद्धि को एक समस्या मानती हैं तो इसका उचित और वास्तविक समाधान यही है कि जीवन निर्वाह के साधनों में वृद्धि की जाय, नये-नये साधनों की खोज की जाय। जिन देशों ने इस समाधान को अपनाया है, उनके जीवन-निर्वाह के साधनों में जनसंख्या वृद्धि की अपेक्षा भी बहुत अधिक वृद्धि हुई है।कारण कि वास्तव में जीवन निर्वाह के साधनों में कमी होने का संबंध जनसंख्या वृद्धि के साथ है ही नहीं। जीवन निर्वाह के साधनों में कमी तब आती है, जब मनुष्य आलसी, प्रमादी, भोगी और अकर्मण्य बनने के कराण अपनी जिम्मेवारी का काम कम करते है, जो कि देश को दरिद्र बनाने वाली चीज है।

(शेष अगले अंक में)

(देश की वर्तमान दशा तथा उसका परिणम-किताब से है)

श्रीराम जन्मभूमि का गौरवपूर्ण रक्तरंजित इतिहास

महेश दीक्षित

(अगले अंक का शेष)

जिसमें बड़ी संख्या में हिन्दू मारे गये। परंतु तीसरे आक्रमण में डटकर नबाबी सेना का सामना हुआ 8वें दिन हिन्दुओं की शक्ति क्षीण होने लगी, जन्मभूमि के मैदान में हिन्दुओं और मुसलमानों की लाशों का ढेर लगर गया। इस संग्राम में भीती, हंसवर, मकर ही, मजुरहट, दीयरा अमेठी के राजा गुरुदत्त सिंह आदि सम्मलित थे। हारती हुई हिन्दू सेना के साथ वीर चिमटाधारी साधुओं की सेना आ मिली और इस युद्ध में शाही सेना के चिथड़े उड़ गये और उसे रौंदते हुए हिन्दुओं ने जन्मभूमि पर कब्जा कर लिया। मगर हर बार की तरह कुछ दिनों के बाद विशाल शाही सेना ने पुनः जन्मभूमि पर अधिकार कर लिया और हजारों हिन्दुओं को मार डाला गया। जन्मभूमि में हिन्दुओं का रक्त प्रवाहित होने लगा।

नवाब वाजिदअली शाह से समय में पुनः हिन्दुओं ने जन्मभूमि के अद्धारार्थ आक्रमण किया। फैजाबाद गजेटियर में कनिंघम ने लिखा इस संग्राम में बहुत ही भयंकर खूनखराबा हुआ। दो दिन और रात होने वाले इस भयंकर युद्ध में सैकड़ों हिन्दुओं के मारे जाने के बावजूद हिन्दुओं ने राम जन्मभूमि पर कब्जा कर लियाद्ध क्रुद्ध हिन्दुओं की भीड़ ने कब्रें तोड़ फोड़ कर बर्बाद कर डझली मस्जिदों को मिसमार करने लगे और पूरी ताकत से मुसलमानों को मार-मार कर अयोध्या से खदेड़ना शुरू किया। मगर हिन्दू भीड़ ने मुसलमान स्त्रियों और बच्चों को कोई हानि नहीं पहुंचाई। अयोध्या में प्रलय मचा हुआ था। इतिहासकार कनिंघम लिखता है की ये अयोध्या का सबसे बड़ा हिन्दू मुस्लिम बलवा था। हिंदुओं ने अपना सपना पूरा किया और औरंगजेब द्वारा विध्वंस किए गए चबूतरे को फिर वापस बनाया। चबूतरे पर तीन फीट ऊंची खस की टाट से एक छोटा सा मंदिर बनवा लिया। जिसमें पुनः रामलला की स्थापना की गयी। कुछ जेहादी मुल्लाओं को ये बात स्वीकार नहीं हुइ और कालांतर में जन्मभूमि फिर हिन्दुओं के हाथों से निकल गया।

सन 1857 की क्रांति में बहादुर शाह जफर के समय में बाबा रामचरण दास ने एक मौलवी आमिर अली के साथ जन्मभूमि के उद्धार का प्रयास किया पर 18 मार्च सन् 1858 को कुबेर टीला स्थित एक इमली के पेड़ में दोनों एक साथ अंग्रेजों ने फांसी पर लटका दिया। जब अंग्रेजों ने ये देखा कि ये पेड़ भी देशभक्तों एवं रामभक्तों के लिए एक स्मारक के रूप में विकसित हो रहा है तब उन्होंने इस पेड़ को कटवा कर इस आखिरी निशानी को भी मिटा दिया... इस प्रकार अंग्रेजों की कुटिल नीति के कारण रामजन्म भूमि के उद्धार का यह एकमात्र प्रयास विफल हो गया... अंतिम बलिदान 30 अक्टूबर 1990 को हजारों रामभक्तों ने वोट बैंक के लालची मुलायम सिंह यादव के द्वारा खड़ी की गई अनेक बाधाओं को पार कर अयोध्या मेंप्रवेश किया और विवादित ढांचे के ऊपर भगवा ध्वज फहरा दिया। लेकिन 2 नवंबर 1990 को मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने कारसेवकों पर गोलीचलाने का आदेश दिया, जिसमें सैकड़ों रामभक्तों ने अपने जीवन की आहुतियां दी। सरकार ने मृतकों की असली संख्या छिपायी परंतु प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार सरयू तट रामभक्तों की लाशों से पट गया था।

4 अप्रैल 1991 को कारसेवकों के हत्यारे, उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने इस्तीफा दिया। लाखों राम भक्त 6 दिसंबर को कारसेवा हेतु अयोध्या पहुंचे और रामजन्म स्थल पर बाबर के सेनापति द्वारा बनाए गए अपमान के प्रतीक मस्जिदनुमा ढांचे को ध्वस्त कर दिया। परंतु हिन्दूसमाज के अंदर व्याप्त घोर संगठनहीनता एवं नपुंसकता के कारण आज भी हिन्दुओं के सबसे बड़े आराध्य भगवान श्रीराम एक फटे हुए तम्बू में विराजमान हैं। जिस जन्मभूमि के उद्धार के लिए हमारे पूर्वजों ने अपना रक्त पानी की तरह बहाया। आज वही हिन्दू बेशर्मी से इसे एक विवादित स्थल कहता है।

सदियों से हिन्दुओं के साथ रहने वाले मुसलमानों ने आज भी जन्मभूमि पर अपना दावा नहीं छोड़ा है। वो यहां किसी भी हाल में मंदिर नहीं बनने देना चाहते हैं ताकि हिन्दू हमेशा कुढ़ता रहे और उन्हें नीचा दिखाया जा सके। जिस कौम ने अपने ही भाईयों की भावना को नहीं समझा वो सोचते हैं हिन्दू उनकी भावनाओं को समझे। आज तक किसी भी मुस्लिम संगठन ने जन्मभूमि के उद्धार के लिए आवाज नहीं उठायी, प्रदर्शन नहीं किया और सरकार पर दबाव नहीं बनाया आज भी वे बाबारी विध्वंस की तारीख 6 दिसंबर को काला दिन मानते हैं। और मूर्ख हिन्दू समझता है कि राम जन्मभूमि राजनीतिज्ञों और मुकदमों के कारण उलझा हुआ है। ये लेख पढ़कर जिन हिन्दुओं को शर्म नहीं आयी वो कृपया अपने घरों में राम का नाम ना लें... अपने रिश्तेदारों से कह दें कि उनके मरने के बाद कोई "राम नाम" का नारा भी नहीं लगाएं।

विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकर्ता एक दिन श्रीराम जन्मभूमि का उद्धार कर वहां मंदिर अवश्य बनाएंगे। इस भारत को अखण्ड बनाकर एक बार फिर से रामराज्य लाएंगे चाहे अभी और कितना ही बलिदान क्यों ना देना पड़े। यह पूरा इतिहास वाट्सएप पर पढ़ने को मिला जिसने मझे पूरी तरह झकझोरकर रख दिया। अतः इसे हिन्दू मात्र की जानकारी के लिये प्रस्तुत किया गया है।

स्टूडेंट हैं और लोन चाहिए तो अच्छे मार्क्स लाएं

सरदार महेंद्र सिंह

कॉलेज एग्जाम में 90 प्रतिशत अंक हासिल कर क्या आप अपने लिए एक आईफोन खरीद सकते हैं? शायद हां। ऐसा इसलिए क्योंकि स्टूडेंट्स को लोन मुहैया करानेवाली ज्यादातर ऑनलाइन कंपनियां स्टूडेंट्स की मार्कशीट की बारीकी से जांच कर क्रेडिट योग्यता का आकलन कर स्टूडेंट्स को कन्ज्यूमर ड्यूरेब्लस के लिए लोन मुहैया कराती हैं। लेटेस्ट लैपटॉप या स्मार्टफोन लेना हो या फिर कोई और गैजेट, बड़ी संख्या में स्टूडेंट्स लोन लेने की कतार में खड़े रहते हैं। ऐसे में लोन देनी वाली कंपनियां भी स्टूडेंट्स को अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए तरह–तरह के गैर–परंपरागत तरीकों का इस्तेमाल कर रही हैं। स्टूडेंट क्रेडिट प्लेटफॉर्म क्रेजीबी के सीईओ मधुसूदन कहते हैं, द्यअगर वयस्कों को लोन चाहिए तो वे अपने आईटी रिटर्न्स, सैलरी स्लिप या क्रेडिट स्कोर दिखा सकते हैं लेकिन स्टूडेंट्स के पास इस तरह का कोई डॉक्यूमेंट नहीं होता है। क्रेडिट मापने के इन परंपरागत तरीकों के अभाव में क्रेडिट मूल्यांकन के लिए असामान्य तरीकों का इस्तेमाल किया जाता है। क्रेजीबी के साढ़े चार लाख स्टूडेंट कस्टमर्स में से 50 प्रतिशत स्टूडेंट्स लैपटॉप, मोबाइल और हार्ड डिस्क खरीदने के लिए लोन लेते हैं। मार्कशीट के अलावा लोन देने वाली ऋणप्रदाता कंपनियां स्टूडेंट जिस शैक्षणिक संस्थान में पढ़ रहा है उसकी प्रसिद्धि, ग्रेजुएशन रेट और प्लेस्टमेंट नंबर की भी जांच करती हैं। मधुसूदन कहते हैं, हम कॉलेज किस टाइप का है और उस व्यक्ति की परफॉर्मेंस कैसी है इस बात की भी जांच करते हैं। कुछ कॉलेजों में स्कोरिंग प्रोसेस को ऑटोमेटड कर दिया है जिस वजह से लोन अप्रूवल की प्रक्रिया तेज हो गई है।

गोवा: 1961 में आज ही के दिन मिली थी आजादी, 1987 में बना राज्य

डॉ. संतोष राय प्रबंध संपादक

पणजी। 19 दिसंबर देश के इतिहास में वह तारीख है, जिस दिन भारतीय सेना ने गोवा, दमन और दीव को करीब 450 साल के पुर्तगाली साम्राज्य से आजाद कराया था। वह वर्ष था 1961। 18 दिसंबर 1961 को भारतीय सेना ने गोवा में ऑपरेशन विजय की शुरुआत की और 19 दिसंबर को पुर्तगाली सेना ने आत्मसर्पण कर दिया।

दरअसल, भारत सरकार की बार–बार आजादी की मांग के बावजूद पुर्तगाली शासन इन इलाकों को आजाद करने के लिए तैयार नहीं था। ऐसे में 18 दिसंबर 1961 को ऑपरेशन विजय की कार्रवाई शुरू हुई। भारतीय सैनिकों ने गोवा में प्रवेश किया और युद्ध शुरू हुआ। बताया जाता है कि 36 घंटे से भी ज्यादा समय तक चले इस युद्ध में 19 दिसंबर को भारत ने गोवा को आजाद करा लिया। पुर्तगाली सेना ने बिना किसी शर्त के 19 दिसंबर को भारतीय सेना के सामने आत्मसमर्पण किया और इस तरह गोवा आजाद हो गया। कहा जाता है कि आकार में छोटे होने के बावजूद गोवा शुरू से ही बड़ा ट्रेड सेंटर रहा है। अपनी लोकेशन की वजह से यह अंग्रेजों को शुरू से ही आकर्षित करता रहा है। इतना ही नहीं मुगल शासन के समय भी राजा इस तरफ आकर्षित होते रहे हैं। बताया जाता है कि गोवा की आजादी के लिए लिए 1950 के आसपास प्रदर्शन जोर पकड़ा। 1954 में भारत समर्थक गोवा के स्वतंत्रता सेनानियों ने दादर और नागर हवेली को मुक्त करा लिया। यहां से आंदोलन और तेज हुआ। 1955 में करीब 3000 से अधिक सत्याग्रहियों ने गोवा की आजादी के लिए आंदोलन शुरू कर दिया। इसके बाद पुर्तगाली सेना ने आंदोलन को कुचलने के लिए हिंसक रूप अख्तियार कर लिया। इस हिंसा में बड़े पैमाने पर लोग मारे गए। लेकिन अब चिंगारी का आग का रूप ले चुकी थी। तनाव बढ़ा और भारत ने पुर्तगाल से सभी राजनयिक संबंध खत्म कर लिए। साथ ही भारत ने अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भी इस मामले को उठाया। हालांकि भारत की इस कोशिश का कोई फायदा नहीं हुआ और बाद में भारत को सैन्य कार्रवाई करनी पड़ी।

30 मई 1987 में गोवा बना राज्य : गोवा यूं तो 1967 में आजाद हो गया लेकिन 30 मई 1987 को उसे राज्य का दर्जा दिया गया। इस तरह से आजादी के करीब 14 साल बाद आजाद होकर भारत में शामिल हुआ गोवा भारत का एक नया राज्य बना। वहीं गोवा के साथ आजाद हुए दमन और दीव केंद्रशासित प्रदेश के रूप में बने हुए हैं।

हिज्बुल में शामिल मन्नान वानी को अटव ने किया सस्पेंड, यूनिवर्सिटी कैंपस में पुलिस का छापा

अशोक शर्मा मेरठ

अलीगढ़। जम्मू–कश्मीर के रहने वाले अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (AMU) के लापता पीएचडी छात्र मनान वानी की तलाश में यूपी पुलिस ने यूनिवर्सिटी में छापेमारी की। एसएसपी के नेतृत्व में जिला पुलिस की एक टीम ने हॉस्टल में जाकर मनान वानी के कमरे की तलाशी ली। आरोपी छात्र के कमरे को सील कर दिया गया है। यूनिवर्सिटी प्रशासन ने संदेह के आधार पर मनान वानी को तत्काल प्रभाव से निलंबित भी कर दिया है। इस बीच एडीजे कानून और व्यवस्था आनंद कुमार ने पुष्टि की है कि मन्नान अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी का छात्र है। उसके साथ ही हॉस्टल के कमरे में रहने वाला एक अन्य छात्र मुजम्मिल भी पिछले चार महीने से लापता है। हॉस्टल के मेस वाले ने बताया कि मन्नान को दो जनवरी को अंतिम बार देखा गया था।

उन्होंने बताया कि सुरक्षा एजेंसियां मामले की जांच कर रही हैं। बता दें, एएमयू के पीएचडी के छात्र मनान वानी ने कथित रूप से आतंकवादी संगठन हिज्बुल मुजाहिदीन जॉइन कर लिया है। बताया जा रहा है कि एसएसपी के नेतृत्व में भारी पुलिस बल ने हॉस्टल में छात्र के कमरे की तलाशी ली। इस बीच एएमयू के छात्र के आतंकी संगठन में शामिल होने की अटकल से विश्वविद्यालय प्रशासन और छात्रों में हड़कंप मच गया है। एएमयू प्रशासन मनान वानी के मामले पर चुप्पी साधे हुए है। साथ ही किसी भी प्रकार की जानकारी होने से इनकार कर रहा है। पहले भी लगे थे गंभीर आरोप। गौरतलब है कि विश्वविद्यालय परिसर में छात्र पर एक साल पूर्व भी इस प्रकार के गंभीर आरोप लगे थे। एएमयू के जनसम्पर्क अधिकारी उमर सलीम पीर जायदा ने बताया कि मनान वानी के हिज्बुल में शामिल होने की अटकल पर अभी तक विश्वविद्यालय प्रशासन को कोई जानकारी नहीं है। उन्होंने कहा कि किसी भी सुरक्षा एजेंसी ने भी इस संबंध में कोई जानकारी नहीं दी है। यह राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा मामला है और यूनिवर्सिटी प्रशासन द्वारा कोई ढिलाई नहीं बरती जाएगी। गौरतलब है कि वानी का एके–47 राइफल के साथ एक फोटो इन दिनों सोशल मीडिया में वायरल हो रहा है।

कौन है मनान वानी? : जम्मू–कश्मीर पुलिस के सूत्रों ने हमारे सहयोगी अखबार मुंबई मिरर को बताया कि वानी के पिता का नाम बशीर अहमद वानी है और वह जम्मू–कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के ताकिपोरा गांव का रहने वाला है। पुलिस के मुताबिक वानी तीन दिन पहले ही एएमयू से कश्मीर गया था। एक पुलिस अधिकारी ने बताया, मनान वानी पिछले पांच साल से एएमयू में पढ़ रहा था। वह एमफिल कर रहा था। वह अब जिऑलजी में पीएचडी कर रहा था। वह यूनिवर्सिटी से घर नहीं आया। दो दिन पहले राइफल के साथ उसकी फोटो फेसबुक पर वायरल हो गई, जिसमें लिखा था कि उसने 5 जनवरी को हिज्बुल जॉइन कर लिया।

अपराधियों के लिए शरणस्थली बने एएमयू : इससे पहले अलीगढ़ पुलिस ने विश्वविद्यालय प्रशासन को पत्र लिखकर कहा था कि अटव के हॉस्टल अपराधियों के लिए शरणस्थली बन गए हैं। ऐसे में विश्वविद्यालय प्रशासन को इस मामले की गंभीरता से जांच करनी चाहिए। अलीगढ़ के एसपी (सिटी) अतुल श्रीवास्तव ने अपने पत्र में कहा है कि हथियारों की लूट मामले का बड़ा आरोपी और उसके तीन साथी विश्वविद्यालय के हॉस्टल में छिपे हुए थे। उन्होंने कहा कि इन अपराधियों ने पुलिस की पूछताछ में हॉस्टल में छिपने की बात मानी है।

मुख्य आरोपी ने माना कि वह अपने साथियों के साथ यूनिवर्सिटी के एसएस नॉर्थ हॉस्टल में छिपा था और इसमें बिहार के एक छात्र ने उनकी मदद की। एसपी का कहना है कि अपराधी इस बात का फायदा उठा रहे हैं कि पुलिस यूनिवर्सिटी कैंपस के अंदर नहीं घुस सकती है। ऐसे में पुलिस ने विश्वविद्यालय प्रशासन से अनुरोध किया है कि इस तरह की गतिविधियों पर रोक लगाए और बाहरी लोगों को हॉस्टल में ना आने दें।

शिया वक्फ बोर्ड ने पीएम मोदी को लिखा पत्र, कहा– आतंकवादी कर रहे मदरसों को फंडिंग

मनीष पांडेय (अयोध्या)

लखनऊ। उत्तर प्रदेश शिया सेंट्रल वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष वसीम रिजवी ने मदर,सों को खत्म करने की पैरवी की है। वसीम रिजवी ने इस संबंध में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर मांग की है कि वक्त आ गया है कि मदरसा शिक्षा को मुख्यधारा से जोड़ा जाए। रिजवी ने पत्र में लिखा है कि कुछ संगठन और कट्टरपंथी मुस्लिम बच्चों को सिर्फ मदरसे की शिक्षा देकर उन्हें सामान्य शिक्षा की मुख्यधारा से दूर कर रहे हैं। मदरसों में जो बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, उनकी शिक्षा का स्तर निचली सतह का है। ऐसे बच्चे सर्व समाज से दूर होकर कट्टरपंथ की तरफ बढ़ रहे हैं। ऐसे में मदरसों को खत्म करने की जरूरत है और उसकी जगह सामान्य शिक्षा नीति बनाई जाए।

कितने मदरसों ने इंजिनियर पैदा किए ? : वसीम रिजवी ने पत्र में सवाल उठाया कि कितने मदरसों ने डॉक्टर, इंजिनियर और आईएएस अफसर पैदा किए हैं? लेकिन कुछ मदरसों ने आतंकी जरूर पैदा किए हैं। वसीम ने कहा है कि सच तो यह है कि मदरसों में शिक्षित युवा रोजगार के मोर्चे पर अनुत्पादक होते हैं। उनकी डिग्रियां सभी जगह मान्य नहीं होती और खासकर निजी क्षेत्र में जो रोजगार है, वहां मदरसा शिक्षा की कोई भूमिका नहीं होती। ऐसे में पूरा समुदाय समाज के लिए हानिकारक हो जाता है। वसीम रिजवी ने इस पत्र में 27 बिंदु दिए हैं।

आतंकवादी संगठन करते हैं फंडिंग : वसीम रिजवी ने पत्र में लिखा है कि ज्यादातर मदरसे जकात के पैसे से चल रहे हैं जो भारत, बांग्लादेश और पाकिस्तान जैसे देशों से आ रहे हैं। कुछ आतंकवादी संगठन भी अवैध रूप से चल रहे मदरसों को फंडिंग कर रहे हैं। मुस्लिम इलाकों में ज्यादातर मदरसे सऊदी अर ब के भेजे धन से चल रहे हैं। इसकी जांच की जानी चाहिए।

दे रहे बम बनाने की ट्रेनिंग : वसीम रिजवी ने लिखा कि वर्तमान रिपोर्ट की जांच में महिलाओं का जेहादी और आतंकी गतिविधियों में शामिल होना एक नई बात के रूप में सामने आई है। यह सुरक्षा एजेंसियों की परेशानी और बढ़ाती है। शिमुली और लालगोला मुर्शिदाबाद में महिलाओं को बम बनाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। साथ ही दूसरे आतंकी गतिविधियों जैसे गोला–बारूद एक जगह से दूसरी जगह तक पहुंचाने की ट्रेनिंग भी दी जा रही है।

रिजवी ने अपनी आत्मा फरर को बेच दी है : उधर, इस पत्र पर प्रतिक्रिया देते हुए एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने रिजवी को सबसे बड़ा अवसरवादी करार दिया है। साथ ही ओवैसी ने रिजवी को जोकर बताया। ओवैसी ने कहा, रिजवी बहुत बड़े अवसरवादी हैं। उन्होंने अपनी आत्मा आरएसएस को बेच दी है। मैं रिजवी को चुनौती देता हूं कि वह एक भी ऐसा मदरसा बता दें, जहां इस तरह (जैसा रिजवी ने पत्र में जिक्र किया है) की पढ़ाई हो रही है। यदि उनके पास सबूत है तो उन्हें गृहमंत्री को इसे सौंपना चाहिए।

शिया वक्फ बोर्ड ने पीएम को खत लिखकर की हुमायूं के मकबरे को तोड़ने की मांग

सतीश मदान (मुरादाबाद)

नई दिल्ली। यूपी शिया सेन्ट्रल वक्फ बोर्ड ने दिल्ली स्थित मुगल बादशाह हुमायूं के मकबरे को तोड़ने और उसे मुस्लिमों के लिए कब्रिस्तान बनाने की मांग की है। प्रधानमंत्री मोदी को लिखे खत में यूपी शिया वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष वसीम रिजवी ने यह मांग की है।

रिजवी ने लिखा है, अगर हुमायूँ के मकबरे को कब्रिस्तान में बदल दिया जाए को मुस्लिमों को 100 सालों तक किसी दूसरे कब्रिस्तान की जरूरत नहीं पड़ेगी। रिजवी ने प्रधानमंत्री को लिखे खत में कहा है कि कुछ मुस्लिम संगठनों ने उनसे दिल्ली के कब्रिस्तानों में जगह की कमी को देखते हुए यूपी में कब्रिस्तान उपलब्ध कराने की गुजारिश की है।

उन्होंने लिखा है कि दिल्ली के निजामुद्दीन इलाके में स्थित हुमायूं का मकबरा 35 एकड़ क्षेत्र में फैला है। रिजवी ने खत में लिखा है कि हुमायूं का मकबरा कोई धार्मिक स्थल नहीं है लिहाजा उसे कब्रिस्तान की श्रेणी का ही मानना चाहिए और उसे तोड़कर वहां कब्रिस्तान बनाया जाना चाहिए।

शिया वक्फ बोर्ड की तरफ से भले ही वसीम रिजवी ने हुमायूं के मकबरे को तोड़ने की मांग की है लेकिन दिल्ली के शिया मुसलमान उनकी इस बात से इत्तेफाक नहीं रखते। वो इस बात को बेहूदा बता रहे हैं। दिल्ली में अंजुमने हैदरी कमिटी के जनरल सेक्रटरी बहादुर अब्बास के मुताबिक दिल्ली में इतनी जगह है कि 100 साल तक भी कब्रिस्तान के लिए जगह की जरूरत नहीं पड़ेगी।

यहां पड़ा था भीषण अकाल, भूख से तड़पते बच्चों को नदी में फेंक रहे थे लोग

अशोक शर्मा (मेरठ)

इंटरनेशनल डेस्क.जर्मन तानाशाह रहे एडॉल्फ हिटलर के होलोकास्ट के चर्चे आज भी दुनियाभर में होते हैं। इस दौर में लाखों की संख्या में जान गंवाने वालों को याद किया जाता है, लेकिन 74 साल पहले घटा बंगाल का ह्यहोलोकास्टद्ब शायद ही इस कदर दुनिया के जेहन में हो। बंगाल (मौजूदा बांग्लादेश, भारत का पश्चिम बंगाल, बिहार और उड़ीसा) ने उस वक्त भयानक अकाल का दौर देखा था। करीब 30 लाख लोगों ने भूख से तड़पकर अपनी जान दे दी थी। हालात ये थे कि भूख से तड़पते बच्चों को लोग नदी में फेंक रहे थे।अकाल में ऐसे थे हालात...

यह सेकंड वर्ल्ड वॉर का दौर था। माना जाता है कि उस वक्त अकाल की वजह अनाज के उत्पादन का घट जाना था। वहीं बंगाल से लगातार अनाज का एक्सपोर्ट हो रहा था। हालांकि, एक्सपर्ट्स के तर्क इससे अलग हैं। लेखक मधुश्री मुखर्जी ने उस अकाल से बच निकले कुछ लोगों को खोज उनसे बातचीत के आधार पर अपनी किताब में लिखा है कि उस वक्त हालात ऐसे थे कि लोग भूख से तड़पते अपने बच्चों को नदी में फेंक रहे थे। न जाने ही कितने लोगों ने ट्रेन के सामने कूदकर अपनी जान दे दी थी। लोग पत्तियां और घास खाकर जिंदा थे। लोगों में सरकार की नीतियों के खिलाफ प्रदर्शन करने का भी दम नहीं बचा था। इस अकाल से वही लोग बचे जो रोजगार की तलाश में कोलकाता (कलकत्ता) चले आए थे या वे महिलाएं जिन्होंने फैमिली को पालने के लिए मजबूरी में प्रॉस्टीट्यूशन का सहारा लिया।

प्राकृतिक या इंसान की पैदा की त्रासदी : ये सिर्फ कोई प्राकृतिक त्रासदी नहीं थी, बल्कि मानवजानित भी थी। ये सच है कि जनवरी 1943 में साइक्लोन ने बंगाल में चावल की फसल को नुकसान पहुंचाया था, लेकिन इसे बावजूद अनाज का उत्पादन घटा नहीं था। इस विषय पर लिखने वाले ऑस्ट्रेलियन साइंटिस्ट और सोशल एक्टिविस्ट डॉ गिडोन पोल्या का मानना है कि बंगाल का अकाल मानवनिर्मित होलोकास्ट था। इसके पीछे अंग्रेज सरकार की नीतियां जिम्मेदार थीं। इस साल बंगाल में अनाज की पैदावार बहुत अच्छी हुई थी, लेकिन अंग्रेजों ने मुनाफे के लिए भारी मात्रा में अनाज ब्रिटेन भेजना शुरू कर दिया। इसके चलते बंगाल में अनाज की कमी हो गई। वहीं, जाने माने अर्थशात्री अमर्त्य सेन का भी मानना है कि 1943 में अनाज के उत्पादन में कोई खास कमी नहीं आई थी, बल्कि 1941 की तुलना में उत्पादन पहले से ज्यादा था।

रोकी जा सकती थी त्रासदी : इसके लिए ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमंत्री विन्सटन चर्चिल को सबसे ज्यादा जिम्मेदार बताया जाता है, जिसने स्थिति से वाकिफ होने के बाद भी अमेरिका और कनाडा के इमरजेंसी फूड सप्लाई के प्रस्ताव को ठुकरा दिया था। इन्होंने प्रभावित राज्यों की मदद की पेशकश की थी। जानकारों का कहना है कि चर्चिल अगर चाहते तो इस त्रासदी को रोका जा सकता था। वहीं, बर्मा (मौजूदा म्यांमार) पर जापान के हमले को भी इसकी वजह मानते हैं। जापान के हमले के चलते म्यांमार से भारत में चावल की सप्लाई बंद हो गई थी।

31 लाख लोगों को बताए बिना एयरटेल पेमेंट बैंक में जमा कर लिए 167 करोड़ रुपये

महेंद्र सिंह

नई दिल्ली। 31 लाख 21 हजार ग्राहकों के 167 करोड़ रुपये एयरटेल पेमेंट्स बैंक में जमा कर दिए गए। खास बात यह है कि ग्राहकों को स्पष्ट जानकारी दिए बिना ही उनके बैंक अकाउंट्स खोले गए थे। इस कारण यूआईएडीएआई ने भारती एयरटेल और एयरटेल पेमेंट बैंक के लिए आधार से केवाईसी की प्रक्रिया पर रोक लगा दी। बहरहाल, इस रकम में 40 करोड़ रुपये हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन, 39 करोड़ रुपये भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन जबकि 88 करोड़ रुपये इंडियन ऑइल कॉर्पोरेशन की ओर से जमा हुए थे।

जांच में पता चला कि एलपीजी सब्सिडी के पैसे एयरटेल पेमेंट्स बैंक में जमा हो रहे थे तो अधिकारियों को लगा कि ये पैसे ग्राहकों को वापस किया जाना चाहिए। दरअसल, यह रकम अनुचित तरीके जमा किए गए और इस प्रक्रिया में भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (यूआईडीएआई) के नियमों का भी उल्लंघन हुआ।

एयरटेल पेमेंट बैंक की चालाकी तब पकड़ में आई जब यूआईडीएआई ने एक ग्राहक की शिकायत पर जांच शुरू की। शिकायतकर्ता का आरोप था कि भारती एयरटेल ने बिना उसकी सहमति से न केवल बैंक अकाउंट खोल दिया बल्कि ऐसी व्यवस्था कर दी कि एलपीजी सब्सिडी की रकम इसी में जमा होने लगा।

एक अधिकारी ने कहा कि ग्राहकों के 167 करोड़ रुपये उनके नॉर्मल बैंक अकाउंट्स में जमा हो जाएं, यह सरकार को सुनिश्चित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार को पेमेंट बैंक्स और वॉलिट्स में सब्सिडी की रकम जमा करना बंद करना चाहिए क्योंकि यूआईडीएआई की जांच में कुछ मामलों में कुकिंग गैस सब्सिडी को ग्राहकों से बिना पूछे एयरटेल पेमेंट बैंक्स में जमा कर दिए गए जबकि उन्होंने अपने नॉर्मल बैंक अकाउंट्स में सब्सिडी लाने के लिए आधार लिंक किए थे।

मामले की जांच के बाद यूआईडीएआई ने अपने अंतरिम आदेश में भारती एयरटेल और एयरटेल पेमेंट्स बैंक को सिम काड्र्स और बैंक अकाउंट्स का आधार लिंक्ड ई–केवाईसी वेरिफिकेशन रोक दिया। यूआईडीएआई ने पाया कि आधार ई–केवाइसी के जरिए मोबाइल वेरिफिकेशन के दौरान एयरटेल रिटेलर्स एयरटेल पेमेंट बैंक में खाते भी खोल रहे थे।

सावरकर टाइम्स द्वारा रिश्ते ही रिश्ते

कार्यालय :- गुलाबदेवी रोड गंदा नाला लोहे का रेलवे पुल, 33 श्याम नगर, जालंधर शहर

संचालक श्रीमति मधु मल्होत्रा

मो. 7837460375

वैकल्पिक ऊर्जा मंत्रालय द्वारा प्रमाणित व Govt सब्सिडी के साथ

सोलर कुकर खरीदें

(रु. 3800 - 900 = रु. 2900 केवल)

कुल कीमत सब्सिडी देय कीमत (टैक्स सहित)

• बिना ईधन (रोटी छोड़कर) सब कुछ बनायें • स्वादिष्ट भोजन (धीमी गति व सम्पूर्ण विटामिन युक्त) • समय बचायें प्रकृति के साथ • प्रदूषण रहित • भोजन गर्म रहता है व जलता नहीं • सुरक्षित, आग का डर नहीं • 2 वर्ष की गारंटी।

आर्ष इलैक्ट्रोनिक्स (प्रा. लि.) दिल्ली

सम्पर्क सूत्र : 09313478317, 09313478324